G20
भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

अंक: 32
जनवरी–जून
2023

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति ने किया टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय एवं टिहरी यूनिट का राजभाषा निरीक्षण

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश के 25 मई, 2023 को देहरादून में आयोजित संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति के निरीक्षण के दौरान निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई को समिति के प्रतिवेदन के पहले नौ खण्ड़ों पर किए गए महामहिम राष्ट्रपति जी के आदेशों का संकलन एवं निरीक्षण में सहयोग संबंधी पत्र सौंपती दूसरी उपसमिति की संयोजक, प्रो. रीता बहुगुणा जोशी, माननीय संसद सदस्य, लोक सभा, उपसमिति की सदस्य श्रीमती संगीता यादव, माननीय संसद सदस्य, लोक सभा एवं श्रीमती रंजन बेन भट्ट, माननीय संसद सदस्य, राज्य सभा, साथ में हैं, उपसमिति के सचिवालय के अधिकारी एवं विद्युत मंत्रालय के संयुक्त सचिव (हाइड्रो), मौ. अफजल एवं सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री अनिल कुमार तथा टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के निदेशक (वित्त), श्री जे.बेहेरा, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री वीर सिंह, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री ईश्वर दत्त तिग्गा एवं उप प्रबंधक(राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा

निगम के टिहरी यूनिट कार्यालय के 25 मई, 2023 को देहरादून में आयोजित संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति के निरीक्षण के दौरान निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई को समिति के प्रतिवेदन के पहले नौ खण्ड़ों पर किए गए महामहिम राष्ट्रपति जी के आदेशों का संकलन एवं निरीक्षण में सहयोग संबंधी पत्र सौंपती दूसरी उपसमिति की संयोजक, प्रो. रीता बहुगुणा जोशी, माननीय संसद सदस्य, लोक सभा, उपसमिति की सदस्य श्रीमती रंजन बेन भट्ट, माननीय संसद सदस्य, राज्य सभा एवं श्रीमती संगीता यादव, माननीय संसद सदस्य, लोक सभा, साथ में हैं, उपसमिति के सचिवालय के अधिकारी एवं विद्युत मंत्रालय के संयुक्त सचिव (हाइड्रो), मौ.अफजल एवं सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री अनिल कुमार तथा टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के निदेशक (वित्त), श्री जे. बेहेरा, टिहरी यूनिट कार्यालय के कार्यपालक निदेशक, श्री एल.पी.जोशी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री वीर सिंह, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री अमर नाथ त्रिपाठी एवं प्रबंधक (राजभाषा), श्री इन्द्र राम नेगी

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' अर्थात जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। जिस राष्ट्र में हमने जन्म लिया है, उसकी उन्नति में सदैव जुटे रहना ही मानव जीवन की सार्थकता को सिद्ध करता है। राष्ट्र के विकास में हमारा कार्यक्षेत्र कोई भी हो, परन्तु हम पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते रहें, यही हमारी सच्ची देशभक्ति और सच्चा राष्ट्रप्रेम होगा।

जैसा कि विदित ही है कि हमारा निगम विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में राष्ट्र को समर्पित है। हमारा सदैव यही प्रयास रहता है कि इस उद्देश्य को पूरा करने की दिशा में हम अपने समर्पित प्रयास हमेशा बढ़ाते रहें। मुझे यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कर्मचारियों ने अपनी लगन और मेहनत से निगम को नई ऊंचाईयां दी हैं। निगम ने अपनी विकास यात्रा 2400 मेगावाट की एक मात्र परियोजना ''टिहरी हाइड्रो पावर काम्पलेक्स'' से प्रारंभ की और अब यह ऊर्जा के प्रत्येक क्षेत्र जल विद्युत, ताप विद्युत, सौर विद्युत और पवन विद्युत में अपनी परियोजनाओं का विस्तार करते हुए बहु परियोजना संगठन में रूप में उभरा है। निगम की विभिन्न परियोजनाएं देश के उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक विस्तारित हो रही है और अनेक परियोजनाएं विस्तार करने की दिशा में अग्रसर हैं। इस विकास यात्रा में अनेक पड़ावों को पार करते हुए हम आगे बढ़ रहे हैं। इस विकास यात्रा में अनेक कर्मचारियों ने अपने प्राणों की आहूतियां भी दी हैं और अनेक कर्मचारियों ने अपना संपूर्ण जीवन निगम की सेवा में झोक दिया। उन सभी कर्मठ कर्मचारियों को हम शेल्यूट करते हैं जिनके कारण निगम आज बहुत सम्मानित स्थिति में हैं।

निगम भारत सरकार के संवैधानिक दायित्वों का निर्वाह करने की दिशा में तत्परता से कार्य कर रहा है। इसी क्रम में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन सुनिश्चित करना भी शामिल है। राजभाषा कार्यान्वयन के लिए निगम में शुरूआत से ही अनेक पहल की गई हैं। इन पहलों में कर्मचारियों के लिए हिंदी की प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध कराना, द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री, कोड, मैनुअल आदि उपलब्ध कराना, प्रशासनिक शब्दावली एवं शब्दकोष उपलब्ध कराना, राजभाषा हिंदी के प्रति उनको प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी की तिमाही प्रतियोगिताओं का आयोजन, समय–समय पर कवि सम्मेलनों एवं अन्य संगोष्ठियों का आयोजन, हिंदी की साहित्यिक एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय स्थापित करना, निगम की वेबसाइट द्विभाषी करना आदि शामिल हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में निगम की राजभाषा पत्रिका ''पहल'' के रूप में कर्मचारियों को एक ऐसा मंच भी उपलब्ध कराया गया है जिसके माध्यम से वे अपनी हिंदी की प्रतिभा को मुखर कर सकते हैं। हाल ही में 25 मई, 2023 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय के निरीक्षण के दौरान निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की भूरि–भूरि प्रशंसा की है, साथ ही अनेक सुझाव भी दिए हैं। हम आगे इन सुझावों को अमल में लाएंगे और समिति की अपेक्षाओं को पूरा करने का भरसक प्रयास करेंगे। इसके लिए मेरा निगम के कर्मचारियों से आग्रह है कि वे अपना समस्त सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करें ताकि राजभाषा विभाग द्वारा तय किए गए लक्ष्यों को पूरा किया जा सके।

(राजीव विश्नोई)

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुंचाना, यही तपस्या का स्वरूप है – *संत तिरुवल्लुवर*

निदेशक (कार्मिक) का संदेश

जैसा कि विदित है कि मैंने हाल ही में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में कार्यभार ग्रहण किया है। मुझे इस निगम का हिस्सा बनने में गौरव की अनुभूति हो रही है जिसे विश्व के सबसे ऊंचे बांधों में एक बांध अर्थात टिहरी बांध के निर्माण का श्रेय प्राप्त है। विश्व में जब भी कहीं बड़े बांधों का निर्माण होगा तो इस बांध की बेमिसाल इंजीनियरिंग का संदर्भ अवश्य ही लिया जाएगा। 2400 मेगावाट के टिहरी हाइड्रो पॉवर काम्पलेक्स में 1000 मेगावाट की टिहरी एचपीपी एवं 400 मेगावाट की कोटेश्वर एचईपी की पूर्व में की गई सफलतापूर्वक कमीशनिंग के बाद शीघ्र ही 1000 मेगावाट की टिहरी पीएसपी के निर्माण एवं कमीशनिंग के साथ ही देश की सबसे बड़ी पीएसपी के रूप में एक और उल्लेखनीय उपलब्धि निगम को प्राप्त होने जा रही है। मुझे यह देखकर हर्ष की अनुभूति हो रही है कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड जल विद्युत की अनेक छोटी–बड़ी परियोजनाओं को पूरा करने के साथ–साथ सौर विद्युत, पवन विद्युत एवं अन्य नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में विविधीकरण करते हुए प्रगति पथ पर अग्रसर है और निगम को प्रत्येक क्षेत्र में अपार सफलता प्राप्त हो रही है।

जैसा कि कहा जाता है कि एक कंपनी उतनी ही महान होती है जितने उसके लोग। मानव संसाधन कंपनी की एक पूंजी है और मानव संसाधन नीतियां संगठनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मानव संसाधन प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य कंपनी के कर्मचारियों पर हुए निवेश से अधिकाधिक लाभ सुनिश्चित करना तथा वित्तीय जोखिम को कम करना है। किसी कंपनी के संदर्भ में मानव संसाधन प्रबंधकों की जिम्मेदारी है कि वे इन गतिविधियों का संचालन प्रभावशाली, वैधानिक, न्यायिक तथा तर्कपूर्ण ढंग से करें। मजबूत, सुदृढ़, संवेदनशील और कर्मचारी हितैषी मानव संसाधन नीतियों ने भी टीएचडीसीआईएल को उसकी वर्तमान ऊंचाई पर लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। टिहरी बांध के निर्माण के दौरान प्रबंधन ने बड़ी कुशलता एवं संवेदनशीलता से उस समय पर नित्य उत्पन्न होने वाले मानव संसाधन से संबंधित मुद्दों को सुलझाया और आने वाली चुनौतियों का डटकर सामना करने हेतु दृढ़–संकल्पित होकर आगे बढ़े। निगम में कार्मिकों के हितों की रक्षा के लिए अनेक मानव संसाधन पहलों की शुरूआत की गई जिससे वे प्रोत्साहित होकर दिन–रात अपने कार्य में जुटे रहे। कार्मिकों के उत्थान के लिए बनाई गई निगम की सुदृढ़ मानव संसाधन नीतियां निगम की उत्तरोत्तर प्रगति की परिचायक हैं। ये नीतियां किसी भी प्रकार की चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाती हैं एवं इन्हीं नीतियों के परिणामस्वरूप निगम ने आज इस मुकाम को हासिल किया है। वर्षों के भागीरथ प्रयास का नतीजा है कि आज निगम सिर्फ हाइड्रो सैक्टर की कंपनी भर न होकर, ऊर्जा के अन्य स्रोतों से विद्युत उत्पादन करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। हालांकि मानव संसाधन नीतियां गतिशील एवं प्रगतिशील होनी चाहिए एवं बदलती संगठनात्मक आवश्यकताओं के साथ बदलनी भी चाहिए। हमारे प्रयास जीवंत और संवेदनशील मानव संसाधन नीतियों को तैयार करने और कार्यान्वित करने के लिए होने चाहिए जो संगठनात्मक और आकांक्षात्मक आवश्यकताओं को पूरा कर सकती हैं। निगम को निरंतर प्राप्त हो रही सफलता का श्रेय मैं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई जी के कुशल नेतृत्व में कार्य कर रहे टीएचडीसी बोर्ड के सभी सदस्यों तथा निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों को देना चाहूंगा। मैं निगम के साथ पूर्व में जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को भी इसका श्रेय देना चाहूंगा, जिन्होंने इसकी ऐतिहासिक प्रगति में अपना योगदान दिया है।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड अपनी व्यावसायिक गतिविधियों के साथ–साथ अपने सांविधिक एवं संवैधानिक दायित्वों का निर्वाह करने के लिए भी कटिबद्ध है। राजभाषा कार्यान्वयन ऐसे ही संवैधानिक दायित्वों में से एक है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए पिछले लगभग 13 वर्षों से राजभाषा पत्रिका ''पहल'' का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने भावों एवं विचारों को व्यक्त करने का माध्यम प्राप्त हुआ है। आइए! हम सब मिलकर नए जोश एवं ऊर्जा से निगम की प्रगति में इसी प्रकार पूरे मनोयोग से जुटे रहें और इसके द्वारा निरंतर रचे जा रहे स्वर्णिम इतिहास का अंग बनें। मैं समस्त टीएचडीसी परिवार के सदस्यों उनके परिवार जन के उज्ज्वल एवं मंगलमय भविष्य की कामना करता हूं।

(शैलेन्द्र सिंह)

निदेशक (तकनीकी) का संदेश

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका ''पहल'' के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। जैसा कि आप जानते ही हैं कि मैंने जून, 2023 में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में निदेशक (तकनीकी) का पदभार ग्रहण किया है। मुझे इस कंपनी के कर्मठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। अपनी नियुक्ति के साथ ही मैंने निगम की विभिन्न परियोजनाओं एवं कार्यालयों का दौरा किया और मैंने देखा कि जिन परियोजनाओं की कमीशनिंग की जा चुकी है, उन परियोजनाओं का अनुरक्षण सर्वश्रेष्ठ तरीके से किया जा रहा है जो कि इन परियोजनाओं से निरंतर विद्युत उत्पादन करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि गत वर्ष निगम की 1000 मेगावाट की टिहरी एचपीपी एवं 400 मेगावाट की कोटेश्वर परियोजनाओं ने डिजाइन ऊर्जा एवं पीएएफ के निर्धारित लक्ष्यों से कहीं बेहतर निष्पादन किया है, वहीं ढुकुवां लघु जल विद्युत परियोजना (24 मेगावाट) एवं कासरगोड सौर ऊर्जा संयंत्र (50 मेगावाट) ने भी रिकार्ड विद्युत का उत्पादन किया है। अपने प्रगति पथ पर आगे बढ़ते हुए निगम उत्तराखंड में टिहरी पीएसपी (1000 मेगावाट), वीपीएचईपी पीपलकोटी (444 मेगावाट) तथा उत्तर प्रदेश में खुर्जा एसटीपीपी (1320 मेगावाट) के निर्माण एवं कार्यान्वयन में जुटा है। इनके अतिरिक्त विभिन्न राज्यों में अनेक जल विद्युत, सौर विद्युत तथा पवन विद्युत परियोजनाएं व्यापार विकास के विभिन्न चरणों में हैं। विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की क्षमताओं पर विश्वास एवं भरोसा दिखाया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप नई–नई परियोजनाओं पर कार्य करने के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

मुझे यह जानकर भी अत्यंत हर्ष है कि निगम में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दिशा में भी ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। जिनके अंतर्गत राजभाषा से संबंधित अन्य क्रियाकलापों के साथ ही राजभाषा पत्रिका ''पहल'' का प्रकाशन भी किया जा रहा है। मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार–प्रसार में महति भूमिका निभा रही है। सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी में कार्य करना अब मुश्किल कार्य नहीं रहा। यूनिकोड प्रणाली ने हिंदी टाइपिंग को बहुत आसान बना दिया है जिसके माध्यम से अधिकारी एवं कर्मचारी आसानी से हिंदी में टाइप कर रहे हैं। यूनिकोड प्रणाली का कार्यान्वयन राजभाषा हिंदी की प्रगति में काफी सहायक सिद्ध हुआ है तथा अब इस प्रणाली के माध्यम से हिंदी के साथ–साथ सभी भारतीय भाषाओं में टाइप करने की सुविधा है। इसके साथ ही जिस प्रकार मोबाइल के माध्यम से फेसबुक एवं व्हाट्सएप पर बोलकर टाइप करते हुए लोग पोस्ट करते हैं उसी प्रकार कम्प्यूटरों में भी बोलकर टाइप करने की सुविधा मौजूद है। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड का राजभाषा अनुभाग हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा नीति, अधिनियम, नियमों के साथ–साथ इस प्रकार का प्रशिक्षण भी उपलब्ध करा रहा है तथा लगभग सभी कर्मचारियों को उक्त प्रशिक्षण दिया गया है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए अब आवश्यकता है तो सिर्फ दृढ़ इच्छाशक्ति की, जिसके माध्यम से ही हम अपने लक्ष्य पूर्ण करने में सक्षम हो पाते हैं। आइए, हम सब मिलकर राजभाषा के लक्ष्यों को पूरा करने के प्रति कटिबद्ध हों और राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन सुनिश्चित करें।

मैं इस संदेश के माध्यम से कर्मचारियों से यह भी अनुरोध भी करता हूं कि वे पर्यावरण की रक्षा के लिए आगे आएं, जिसकी आज सर्वाधिक आवश्यकता है। इसके लिए वृक्षों का कटान रोकने के लिए कदम उठाएं एवं पौधरोपण में भागीदार बने, जल संरक्षण करें तथा बिजली बचाएं। इनके साथ ही एकल प्रयोग में प्रयुक्त होने वाली प्लास्टिक के उपयोग में कमी लाएं। ग्लोबल वार्मिंग का सर्वाधिक दुष्प्रभाव विशेषतया पहाड़ों पर पड़ रहा है और वे निरंतर खतरनाक स्थिति में जा रहे हैं। हम सबके संयुक्त प्रयासों से ग्लोबल वार्मिंग के इन दुष्प्रभावों को रोकने में मदद मिलेगी।

भूपेन्द्र गुप्ता

(भूपेन्द्र गुप्ता)

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक–32)

मुख्य संरक्षक
श्री राजीव विश्नोई
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री शैलेन्द्र सिंह
निदेशक (कार्मिक)

मार्गदर्शक
श्री वीर सिंह
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

श्री ईश्वरदत्त तिग्गा
अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

संपादक
श्री पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री नरेश सिंह
कनि. अधिकारी (हिंदी)

श्रीमती हेमलता कौर
कनि. अधिकारी (हिंदी)

संपर्क सूत्र
संपादक
''पहल''
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड,
ऋषिकेश–249201, उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेलः pankajksharma@thdc.co.in

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

विषय सूची

लेख / प्रेरक प्रंसग / लघुकथा

1. निगम के नए निदेशक गण 5
2. भारत की राजभाषा में लिपि विमर्श 6
3. हिंदी दिवस, तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 10
4. ग्रीन हाइड्रोजन–भविष्य का ईंधन 11
5. अच्छे संचार की विशेषताएं एवं लाभ 15
6. भारत के इतिहास की खोज की कहानी 18
7. अत्यधिक प्रभावी लोगों की 7 आदतें पुस्तक का सारांश 20
8. मुक्ति 21
9. पहेली का राज 22
10. अमेरिका में दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जायेगी हिंदी 23
11. मन पतंग 24
12. स्वस्थ रहने के लिए करें नियमित रूप से योगासन 27
13. राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2023–24 का वार्षिक कार्यक्रम . 29

कविताएं / क्षणिकाएं / विचार

14. अकेलापन 31
15. बेटियाँ 31
16. मेरे प्यारे दिनकर 31
17. स्वाधीनता के 75 वर्ष 32
18. जंगल की व्यथा 33
19. मां–बाप की आशीषें 34
20. तुम्हारा साथ चलना 35
21. रास्ते सारे खो जाते हैं 35
22. मेरे हर ख्याल का तू एक ख्याल है 35

राजभाषा गतिविधियां

23. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 36
24. नराकास हरिद्वार की 35वीं अर्धवार्षिक बैठक 39
25. नराकास टिहरी की 24वीं अर्धवार्षिक बैठक 40

भाग्य में नहीं, अपनी शक्ति में विश्वास रखो – *डॉ. बी.आर.अंबेडकर*

हार्दिक शुभकामनाएं

निगम के नए निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह

श्री शैलेन्द्र सिंह ने 06 जून, 2023 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक) का पदभार ग्रहण किया। इससे पूर्व, आप विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के एसजेवीएनएल, मिनी रत्न अनुसूची ''ए'' पीएसयू के कारपोरेट कार्यालय, शिमला में मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) के पद पर आसीन थे और मानव संसाधन विभाग के प्रमुख का पदभार संभाल रहे थे। श्री सिंह ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा शिमला के प्रतिष्ठित सेंट एडवर्ड स्कूल से प्राप्त की। आपने गवर्नमेंट कॉलेज, शिमला से अंग्रेजी (ऑनर्स) में स्नातक किया है और कॉलेज के टॉपर रहे हैं। श्री सिंह ने 1989 में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की।

आपने एसजेवीएनएल में वर्ष 1992 में कार्यपालक प्रशिक्षुओं के प्रथम बैच से अपने करियर की शुरूआत की। आपके पास मानव संसाधन के सभी क्षेत्रों में 30 से अधिक वर्षों का समृद्ध और विविधतायुक्त अनुभव है। आपने कारपोरेट कार्यालय के साथ–साथ दो प्रमुख जल विद्युत केन्द्रों, 1500 मेगावाट के एनजेएचपीएस तथा 412 मेगावाट के आरएचपीएस में मानव संसाधन प्रमुख के रूप में कार्य किया है। आपके पास एमिटी, न्यूयॉर्क (यूएसए) में आयोजित ग्लोबल बिजनेस लीडरशिप, रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, लंदन (यूके) में आयोजित मानव संसाधन कार्यों के आधुनिकीकरण तथा एएससीआई, हैदराबाद में आयोजित विभिन्न नेतृत्व और प्रबंधन कार्यक्रमों जैसे विभिन्न उन्नत राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अनुभव है। एसजेवीएनएल में अपने कार्यकाल के दौरान, आपने अनेक मानव संसाधन पहलों का कार्यान्वयन किया जिनमें पूरे संगठन में मानव संसाधन मॉड्यूल आधारित एसएपी का कार्यान्वयन, रणनीतिक हस्तक्षेप के रूप में संतुलित स्कोर कार्ड का कार्यान्वयन, विभिन्न एल एंड डी हस्तक्षेपों के माध्यम से पूरे संगठन के कर्मचारियों का विकास करना और मीडिया आउटरीच को बढ़ावा देना शामिल है।

निगम के नए निदेशक (तकनीकी), श्री भूपेन्द्र गुप्ता

श्री भूपेंद्र गुप्ता ने 09 जून, 2023 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में निदेशक (तकनीकी) के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है। टीएचडीसीआईएल में नियुक्ति से पूर्व श्री गुप्ता भूटान में पुनातसांग्चू जलविद्युत परियोजना प्राधिकरण में निदेशक (तकनीकी) के पद पर कार्यरत थे। इससे पहले, आप आरईसी की दो सहायक कंपनियों अर्थात आरईसी ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट्स कंपनी लिमिटेड और आरईसी पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड में परिचालन प्रमुख के रूप में अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी के पद पर कार्य कर चुके हैं। आरईसी में अपने कार्यकाल के दौरान, आपको विद्युत क्षेत्र की परियोजनाओं के निष्पादन, परियोजना प्रबंधन, संविदा प्रबंधन और परामर्श का उत्तरदायित्व सौंपा गया था। श्री गुप्ता के पास लगभग 32 वर्षों का समृद्ध और विशाल कार्यानुभव है, जिसमें से लगभग 29 वर्षों तक आपने विद्युत क्षेत्र में काम किया है जिसमें आप ट्रांसमिशन/वितरण परियोजनाओं के साथ–साथ बड़ी जलविद्युत परियोजनाओं के नियोजन/डिजाइन/निष्पादन/संविदा और परियोजना प्रबंधन तथा ओएंडएम का कार्य देख रहे थे।

श्री गुप्ता इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक हैं और परिचालन प्रबंधन में एमबीए हैं। आरईसी लिमिटेड में 2007 में कार्यभार संभालने से पूर्व आपने सतलुज जल विद्युत निगम लिमिटेड (एसजेवीएनएल) में विभिन्न पदों पर 12 वर्षों तक कार्य किया, जहां पर आप भारत में अब तक की सबसे बड़ी प्रचालनाधीन जलविद्युत परियोजना 1500 मेगावाट के नाथपा झाकड़ी हाइड्रो पावर प्लांट के इलेक्ट्रो–मैकेनिकल उपकरणों की योजना, निर्माण और कमीशनिंग के कार्य के लिए उत्तरदायी रहे। आपने भूटान में पहले भी लगभग 03 वर्षों (2002 से 2005 तक) तक 1020 मेगावाट के ताला हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर प्रोजेक्ट में प्रतिनियुक्ति पर कार्य किया है।

भारत की राजभाषा में लिपि विमर्श

लेख

यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी
सदस्य – हिंदी सलाहकार समिति,
केंद्रीय संस्कृति और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार

विषय बोधक शब्द (की–वर्ड) : लिपि, ध्वनि, वाणी, लेखन, बोलना, समझना, लिखना, वांग्मय, नाद, भाषा, ब्राह्मी (देवनागरी हिंदी, गुजराती, बंगाली, मराठी, डोंगरी, पंजाबी) (द्रविड़ लिपि तेलुगु और कन्नड़) 'ग्रंथ लिपि' तमिल और मलयालम, लिपि का इतिहास क्रम, क्रमशः ब्राह्मी लिपि, सैंधव लिपि, वैदिक संस्कृत, संस्कृत, ब्राह्मी, प्राकृत, पाली, खरोष्ठी, कुटीलाक्षय और फिर कैथी आदि लिपि, दक्खिनी, देवनागरी, राजभाषा।

भारत की राजभाषा में लिपि विमर्श : भाषा हमारे विचारों, अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का मौखिक माध्यम है। भाषा की ध्वनियों को लिखने के लिए हम जिन चिह्नों का इस्तेमाल करते हैं, वही अभिव्यक्ति का लिखित स्वरूप उस भाषा की लिपि कहलाती है। लिपि का शाब्दिक अर्थ होता है–लिखित या चित्रित करना। मानव की बौद्धिक कृति लिपि मानव के प्रमुख आविष्कारों में से एक है। मानव–सभ्यता के विकास में, वाणी के बाद लेखन का ही सबसे अधिक महत्व है। मानव के बोलने की शैली, एक दूसरे को समझने की समझ तथा लिखने की कला ही मानवों को पशुओं से श्रेष्ठ बना देती है। कोई भी लिपि अधिकार (शासन–सत्ता) से नहीं पनपी। दुनिया के सभी वांग्मय की समस्त लिपियां आम नागरिकों द्वारा रोपी गई हैं, जिसकी फसलें आज भी उस भाषा का कल्पवृक्ष हैं।

हम नाद, माहेश्वर सूत्र की परम्परा के वंशज हैं। भारत का इतिहास कहीं से भी कुरेद कर देखा जाए तो इतिहास अपने रसातल तक यही बार–बार कहेगा कि लाखों वर्षो में हजारों भाषाएं और सैकड़ों लिपियाँ बसी–उजड़ी, पर किसी भी समुदाय की संपत्ति कोई भी भाषा नहीं रही कभी। कई भाषाओं की लिपि एक जैसी ही रही है, पर परस्पर किसी एक भाषा ने किसी दूसरी भाषा को अस्तित्वहीन नहीं किया कभी। यूनेस्को के एक शोध के अनुसार 'जब एक लिपि विलुप्त होती है, तो उसके साथ–साथ एक पूरी संस्कृति विलुप्त हो जाती है, एक पूरा इतिहास विलुप्त हो जाता है।'

भारत का पुरालेखीय इतिहास कहता है कि सभी भारतीय लिपि ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। लिपि के तीन मुख्य परिवार हैं – 'देवनागरी लिपि' उत्तरी और पश्चिमी भारत जैसे हिंदी, गुजराती, बंगाली, मराठी, डोंगरी, पंजाबी आदि भाषाओं का आधार है। 'द्रविड़ लिपि' तेलुगु और कन्नड़ का आधार है। 'ग्रंथ लिपि' तमिल और मलयालम जैसे द्रविड़ भाषाओं का उपखंड है। लिपि का इतिहास क्रम क्रमशः ब्राह्मी लिपि, सैंधव लिपि, वैदिक संस्कृत, संस्कृत, ब्राह्मी, प्राकृत, पाली, खरोष्ठी, कुटीलाक्षय और फिर कैथी आदि लिपि आती है।

भारत की लिपि : विश्व की प्राचीनतम ज्ञात लिपि 'सिंधु लिपि' है। इसे 'सिंधु– सरस्वती लिपि' और 'हड़प्पा लिपि' भी कहते हैं। भारत में लिपि की उत्पत्ति हड़प्पा सभ्यता से अनुमानित की जाती है, परन्तु वह लिपि पढ़ी नहीं जा सकी है अब तक अद्यतन। सिंधु घाटी की सभ्यता से संबंधित छोटे–छोटे संकेतों के समूह को 'सिंधु लिपि' कहा गया। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि यह लिपि ब्राह्मी लिपि की पूर्ववर्ती है। यह लिपि बौस्ट्रोपफेडन शैली का एक उदाहरण है क्योंकि यह लिपि दाएं से बाएं ओर और बाएं से दाएं की ओर लिखी जाती थी।

'ब्राह्मी लिपि' एक प्राचीन लिपि है। भारत की समस्त वर्तमान लिपियां (अरबी–फारसी लिपि को छोड़कर) ब्राह्मी से ही विकसित हुई हैं। इस प्रकार भारतवंशी अधिकतर लिपियों की जननी ब्राह्मी लिपि है। तिब्बती, सिंहली, कोरियाई तथा दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों की बहुत–सी लिपियाँ ब्राह्मी से ही जन्मी हैं। धर्म की तरह लिपियाँ भी देशों और जातियों की सीमाओं को लांघती चली गईं। 5वीं सदी ईसा पूर्व से 350 ईसा पूर्व तक इसका एक ही रूप मिलता है, लेकिन बाद में इसके दो विभाजन हो जाते हैं– उत्तरी धारा व दक्षिणी धारा। बाएं से दाएं लिखी जाने वाली ब्राह्मी लिपि की

उत्तरी धारा में गुप्त लिपि, कुटिल लिपि, शारदा और देवनागरी को रखा गया है और दक्षिणी धारा में तेलुगु, कन्नड़, तमिल, कलिंग, ग्रंथ, मध्य देशी और पश्चिमी लिपि शामिल हैं। प्राचीन ब्राह्मी लिपि के उत्कृष्ट उदाहरण सम्राट अशोक द्वारा ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में बनवाये गए शिलालेखों के रूप में अनेक स्थानों पर मिलते हैं।

सिंधु लिपि के बाद 'खरोष्ठी लिपि' भारत की प्राचीन लिपियों में से एक है। यह दाएं से बाएं की तरफ लिखी जाती थी। कुल 37 वर्णों वाली इस लिपि में स्वरों का अभाव था, यहां तक कि मात्राएं और संयुक्ताक्षर भी नहीं मिलते हैं। 'शाहबाजगढ़ी' और 'मानसेहरा' (पाकिस्तान) स्थित सम्राट अशोक के अभिलेख 'खरोष्ठी लिपि' में हैं। इसका इस्तेमाल उत्तर–पश्चिमी भारत की गांधार संस्कृति में किया जाता था और इसलिए इसको 'गांधारी लिपि' भी बोला जाता है। इस लिपि के उदाहरण 'प्रस्तर शिल्पों', 'धातु निर्मित पत्रों', 'भांडों', 'सिक्कों', 'मूर्तियों' तथा 'भूर्जपत्र' आदि पर उपलब्ध मिले हैं। 'खरोष्ठी लिपि' के प्राचीनतम लेख 'तक्षशिला' और चार (पुष्कलावती) के आसपास से मिले हैं, किंतु इसका मुख्य क्षेत्र उत्तरी पश्चिमी भारत एवं पूर्वी अफगानिस्तान था। 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' के संस्थापक जेम्स प्रिंसेप (1799–1840) ने आधुनिक युग में पहली बार 'ब्राह्मी' और 'खरोष्ठी' लिपियों को पढ़कर दुनिया को भारतीय भाषा की जड़ों की गहराई से परिचित कराया। 'गुप्त लिपि' को 'ब्राह्मी लिपि' भी बोला जाता है। यह गुप्त काल में 'संस्कृत' लिखने के लिए प्रयोग की जाती थी। 'देवनागरी', 'गुरुमुखी', 'तिब्बतन' और 'बंगाली'–'असमिया' लिपि का उद्भव इसी लिपि से हुआ है।

'गुप्त लिपि' का परिवर्तित रूप मानी जाने वाली 'कुटिल लिपि' को 'न्यूनकोणीय लिपि' तथा 'सिद्धमातृका' लिपि भी कहा जाता है। इस लिपि में अक्षरों के सिर ठोस त्रिकोण जैसे हैं, लेकिन कहीं–कहीं ये आड़े–तिरछे, टेढ़े–मेढ़े या कुटिल ढंग से भी हैं। यह लिपि छठी शताब्दी से 9वीं शताब्दी तक प्रचलन में रही।

आठवीं–नौंवी शताब्दी में कश्मीर में 'पश्चिमी ब्राह्मी' 'सिद्धमातृका लिपि' से 'शारदा लिपि' विकसित हुई। इसका उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी–पश्चिमी भाग में सीमित था। 'नागरी लिपि' की तरह 'शारदा लिपि' भी 'कुटिल लिपि' से निकली है। 'शारदा लिपि' के अनेक अभिलेख कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश आदि में मिले हैं। 'शारदा लिपि' का सबसे पहला लेख सराहा (चंबा, हिमाचल प्रदेश) से प्राप्त प्रशस्ति है और उसका समय दसवीं शताब्दी है। यह कश्मीरी और गुरुमुखी (अब पंजाबी लिखने के लिए प्रयोग किया जाता है) लिपि में विकसित हुआ। सिखों के दूसरे गुरु अंगद देव द्वारा विकसित 'गुरुमुखी लिपि' में पंजाबी भाषा में 'गुरु ग्रंथ साहिब' का संकलन हुआ है।

7वीं से 12वीं शताब्दी के दौरान कलिंग प्रदेश (ओडिशा का प्राचीन नाम) में जिस लिपि (उड़िया के प्राचीन रूप को लिखने के लिए) का प्रयोग किया गया था उसे 'कलिंग लिपि' के रुप में जाना जाता है। इस लिपि में भी तीन शैलियाँ देखने को मिलती हैं। प्रारंभिक लेखों में मध्यदेशीय और दक्षिणी प्रभाव देखने को मिलता है। अक्षरों के सिरों पर ठोस चौखटे दिखाई देते हैं। आरम्भिक अक्षर समकोणीय हैं। लेकिन बाद में कन्नड़–तेलुगु लिपि के प्रभाव के अंतर्गत अक्षर गोलाकार होते नजर आते हैं। 11 वीं शताब्दी के अभिलेख नागरी लिपि के हैं। पोड़ागढ़ (आंध्र प्रदेश) से नल वंश का (एकमात्र उपलब्ध शिलालेख) अभिलेख मिला है, उसके अक्षरों के सिरे वर्गाकार हैं।

दक्षिण भारत की प्राचीन लिपियों में एक 'ग्रंथ लिपि' है। 'तमिल'–'मलयालम' 'तुलु' व 'सिंहल' आदि लिपियों का विकास 'ग्रंथ लिपि' से हुआ है। दक्षिण भारत यतमिलनाडुद्ध के पल्लव, पांडव एवं चोल शासकों ने ग्रंथ लिपि का विकास किया। इस लिपि का एक और संस्करण 'पल्लव ग्रंथ', पल्लव लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता था, इसलिए इसे 'पल्लव लिपि' भी कहा जाता था। कई दक्षिण भारतीय लिपियाँ, जैसे कि बर्मा की 'मोन लिपि', इंडोनेशिया की 'जावाई लिपि' और 'मेर लिपि' इसी संस्करण से उपजी हैं। महाबलीपुरम में धर्मराज रथ पर ग्रंथ लिपि में विवरण अंकित हैं। राजसिंह द्वारा बनवाए गए कैलाश मंदिर पर उत्कीर्ण शिलालेख, 'ग्रंथ लिपि' में ही हैं। 'तमिल' और 'मलयालम' भाषा को लिखने में 'वट्टेलुतु लिपि' का उपयोग किया जाता था। इस लिपि पर ब्राह्मी लिपि का बहुत प्रभाव है और कुछ इतिहासकारों का कहना है कि इसका विकास ब्राह्मी लिपि से ही हुआ है।

'तेलुगू' एवं 'कन्नड़' इन दोनों लिपियों का उद्‌गम स्रोत एक ही है और चालुक्य कालीन 'हलेबिड शिलालेख' (कर्नाटक) इसका प्राचीनतम साक्ष्य है। बाद में यह लिपि स्वतंत्र रूप से विभाजित हो गई 'तेलुगू लिपि' एवं 'कन्नड़ लिपि' में। 'कदंब लिपि' इसे 'पूर्व–प्राचीन कन्नड़ लिपि' भी बोला जाता है। इसी लिपि से 'कन्नड़' में लेखन का आरम्भ हुआ। यह कलिंग लिपि से लगभग मिलती–जुलती है। इसका इस्तेमाल 'संस्कृत', 'कोंकणी', 'कन्नड़' और 'मराठी' लिखने के लिए किया जाता था।

'तमिल लिपि' भारत और श्रीलंका में तमिल भाषा को लिखने में प्रयोग की जाती थी। यह ग्रंथ लिपि और ब्राह्मी के दक्षिणी रूप से विकसित हुई। यह शब्दावली की भाषा है न कि वर्णमाला वाली। इसे बाएं से दाएं लिखा जाता है। 'सौराष्ट्र', 'बडगा', 'इरुला' और 'पनिया' आदि जैसी भाषाएं तमिल में लिखी जाती हैं। 'शाहमुखी लिपि' सूफियों द्वारा चलाई गई 'ईरानी लिपि' का 'पंजाबी' संस्करण है। अक्षरों में तोड़–मोड़ कर हेमाद्रि ने 'मोडी लिपि' शुरू की। अक्षरों में तोड़–मोड़ के कारण इसे 'मोडी लिपि' कहा गया। 1950 से पहले मराठी को इसी लिपि में लिखा जाता था।

'देवनागरी लिपि': 'ब्राह्मी लिपि' से 'नागरी लिपि' का विकास हुआ। पहले इसे 'प्राकृत' और 'संस्कृत' भाषा को लिखने में उपयोग किया जाता था। इसी लिपि से ही 'नंदिनागरी', 'देवनागरी', आदि लिपियों का विकास हुआ है। कई अनुसंधान इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि इस लिपि का विकास प्राचीन भारत में पहली से चौथी शताब्दी में गुजरात में हुआ था। बाएं से दाएं की ओर लिखी जाने वाली 'देवनागरी लिपि' अत्यंत व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक लिपि है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खींची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है) इसे 'शिरोरेखा' कहते हैं। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियों (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। इसमें ध्वनि एवं अक्षरों का उत्कृष्ट समन्वय होता है। इससे वैज्ञानिक और व्यापक लिपि शायद केवल 'आइपीए लिपि' है। भारत के संविधान में देवनागरी लिपि को मान्यता प्रदान की गई है। 'संस्कृत', 'पालि', 'हिंदी', 'मराठी', 'कोंकणी', 'सिंधी', 'कश्मीरी', 'डोगरी', 'खस', 'नेपाली' ('अन्य नेपाली भाषाएं'), 'ताम्र भाषा', 'गढ़वाली', 'बोडो', 'अंगिका', 'मगही', 'भोजपुरी', 'मैथिली', 'संथाली' आदि भाषाएँ 'देवनागरी लिपि' में लिखी जाती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थितियों में 'गुजराती', 'पंजाबी', 'बिष्णुपुरिया मणिपुरी', 'रोमानी' और 'उर्दू' भाषाएं भी देवनागरी में लिखी जाती हैं। भारतीय और कुछ विदेशी भाषाओं द्वारा लिखी जाने वाली यह विश्व की सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली लिपियों में से एक है। भारत की 'बांग्ला', 'गुजराती', 'गुरुमुखी' आदि कई लिपियाँ देवनागरी से बहुत अधिक मिलती–जुलती हैं । कम्प्यूटर प्रोग्रामों की सहायता से भारतीय लिपियों को परस्पर परिवर्तन करना बहुत आसान हो गया है। भारत तथा एशिया की अनेक लिपियों के संकेत देवनागरी से अलग हैं (उर्दू को छोड़कर), पर उच्चारण व वर्ण–क्रम आदि देवनागरी के ही समान हैं, क्योंकि वो सभी ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हुई हैं। इसलिए इन लिपियों को परस्पर आसानी से लिप्यंतरित किया जा सकता है। इस लिपि में विश्व की समस्त भाषाओं की ध्वनियों को व्यक्त करने की क्षमता है। यही वह लिपि है जिसमें संसार की किसी भी भाषा को रूपांतरित किया जा सकता है।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता : देवनागरी लेखन की दृष्टि से सरल, सौंदर्य की दृष्टि से सुन्दर और वाचन की दृष्टि से सुपाठ्य है। भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे पाठ को लगभग 'हू–ब–हू' उच्चारण किया जा सकता है, जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपियों में सम्भव नहीं है, जब तक कि उनका कोई खास मानकीकरण न किया जाए, जैसे आइट्रांस या आइएएसटी। इसमें कुल 52 अक्षर हैं, जिसमें 14 स्वर और 38 व्यंजन हैं। अक्षरों की क्रम व्यवस्था (विन्यास) भी बहुत ही वैज्ञानिक है। स्वर–व्यंजन, कोमल–कठोर, अल्पप्राण–महाप्राण, अनुनासिक–अन्तस्थ–उष्म इत्यादि वर्गीकरण भी वैज्ञानिक हैं।

– एक ध्वनि–एक सांकेतिक चिह्न एक सांकेतिक चिह्न एक ध्वनि,

– स्वर और व्यंजन में तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक क्रम–विन्यास, वर्णों की पूर्णता एवं सम्पन्नता, उच्चारण, लेखन और मुद्रण में एकरूपता, स्पष्टता

– रोमन,अरबी और फारसी में हस्तलिखित और मुद्रित रूप अलग– अलग हैं।

– देवनागरी लिपि सर्वाधिक ध्वनि चिह्नों को व्यक्त करती है।

– लिपि चिन्हों के नाम और ध्वनि में कोई अंतर नहीं (जैसे रोमन में अक्षर का नाम 'बी' है और ध्वनि ब' है)

– मात्राओं का प्रयोग, अर्ध अक्षर के रूप की सुगमता

कैथी लिपि : पाँचवीं–छठी शताब्दी से शुरू होने वाली और फिर प्रशासनिक गतिविधियों के लिए कैथी लिपि बीसवीं शताब्दी के पहले दशक तक अलग–अलग समयों और जगहों पर जनलिपि, व्यापारिक लिपि, राजकीय लिपि और न्याय प्रणालिक लिपि के रूप में प्रचलित, समृद्ध और व्यावहारिक रही है। नियमित लेखन, साहित्यिक रचना, वाणिज्यिक लेनदेन, पत्राचार और व्यक्तिगत रिकॉर्ड रखने के लिए इस लिपि का उपयोग किया जाता था। एक धर्मनिरपेक्ष लिपि होने के बावजूद कैथी का उपयोग साहित्यिक और धार्मिक पांडुलिपियों को लिखने के लिए किया जाता था। इसकी लोकप्रियता की एक बड़ी वजह इसकी सुगमता थी।

गुप्त काल में 'कैथी लिपि' राज लिपि थी। सन् 1540 ईसवी में शेरशाह सूरी (उत्तर भारत) ने कैथी भाषा और लिपि को अपने शासन की आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया था। शेरशाह सूरी के शासन काल में व्यापारिक दृष्टिकोण से कैथी लिपि में मुद्राएं भी ढ़लवाई गई थी। 19 वीं सदी (ब्रितानिया हुकूमत तक) बिहार में आधिकारिक लिपि के रूप में यह मानित थी। सन् 1854 ईसवी में विद्यालयों में देवनागरी के मुकाबले में तीन गुना अधिक कैथी लिपि में रचित प्रारंभिक पुस्तकें थीं। सन् 1880 ईसवी में ब्रिटिश सरकार ने बिहार के न्यायालयों में वैधानिक लिपि के रुप में इसे मान्यता दी थी। मानित अमानित होते यह भाषा अपनी लिपि के साथ भूमि निबंधन आदि में सन् 1970 ईसवी तक उपयोग में रही।

बिहार में लोक गीत, सूफी गीत और तंत्र–मंत्र की पुस्तकें भी कैथी लिपि में लिखी जा चुकी हैं। कर्ण कायस्थ की पज्जी व्यवस्था की मूल प्रति भी कैथी लिपि में ही दरभंगा महाराज के संग्रहालय में सुरक्षित है। पटना म्यूजियम में कैथी लिपि की एक स्टोन स्क्रिप्ट भी सुरक्षित है। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद अपनी पत्नी को कैथी लिपि में ही चिट्ठियां लिखा करते थे। भिखारी ठाकुर के संदर्भ 'कैथी लिपि' में ही उपलब्ध हैं। स्वतंत्रता सेनानी एवं भोजपुरी गीतों के पूर्वी धुन के रचयिता श्री महेंद्र मिश्र के संदर्भ 'कैथी लिपि' में ही उपलब्ध हैं। चम्पारण आंदोलन के लिए महात्मा गांधी को बिहार लाने वाले पंडित राजकुमार शुक्ल की डायरी भी 'कैथी लिपि' में ही मिली है। महान स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय वीर कुंवर सिंह के हस्ताक्षर भी 'कैथी लिपि' में मिले हैं। समय के साथ क्रिश्चियन मिशनरीज ने अपने साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद इसी 'कैथी लिपि' में किया। 'कैथी लिपि' को 'सिलेटी नागरी' और कई अन्य लिपियों का पूर्वज भी माना जाता है। इसका इस्तेमाल 'देवनागरी', 'फारसी' और अन्य समकालीन लिपियों के साथ किया जाता था। महाजनों के द्वारा बही–खाते लिखने में इस्तेमाल होने के कारण यह 'महाजनी लिपि' भी कहलाई। बिहार, बंगाल का मालदा, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश तक 'कैथी लिपि' को जानने वाले लोग मौजूद थे। बंगाल के पश्चिमी क्षेत्रों समेत सम्पूर्ण उत्तर भारत में सबसे ज्यादा लोकप्रिय लिपि थी 'कैथी लिपि'। खण्ड–खण्ड भारत में महाजनपदों की भाषाओं में भोजपुर के साहित्य इतिहास का इतिहास ही भोजपुरी का इतिहास है।

'कैथी लिपि' में ही 'अवधि' (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, नेपाल), 'मगही' (बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल), 'बिहारी' (बिहार परिक्षेत्र), 'मैथिली' (बिहार, नेपाल), 'बज्जिका' (समस्तीपुर, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, वैशाली, पूर्वी चम्पारण, सारण, शिवहर, दरभंगा और नेपाल), 'राजस्थानी' (पश्चिमी क्षेत्र), मारवाड़ी (कुछ), 'भोजपुरी' (मध्य प्रदेश, नेपाल, मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम और फिजी) आदि भाषाएं लिखी और व्यावहारिक हुईं।

कैथी और देवनागरी लिपिः समानता और असमानता : 'कैथी लिपि' का उद्भव पांचवीं शताब्दी में और 'देवनागरी लिपि' का उद्भव दसवीं शताब्दी में हुआ। 'कैथी लिपि' केवल भारतीय भाषाओं में उपयोग और 'देवनागरी लिपि' भारतीय एवं कई विदेशी भाषाओं में उपयोग हुई। 'कैथी लिपि' में शिरोरेखा नहीं होती और 'देवनागरी लिपि' में शिरोरेखा

आवश्यक है। 'कैथी लिपि' में दो शब्दों के बीच में दूरी नहीं होती और 'देवनागरी लिपि' में दो शब्दों के बीच में दूरी होती है। कई भाषाओं में 'कैथी लिपि' में 'ऊ' की मात्रा नहीं होती और 'देवनागरी लिपि' में ऊ की मात्रा होती है। कई भाषाओं में 'कैथी लिपि' में 'इ' की मात्रा नहीं होती और 'देवनागरी लिपि' में इ की मात्रा होती है। कई भाषाओं में 'कैथी लिपि' में चंद्रबिंदु की मात्रा नहीं होती और 'देवनागरी लिपि' में चंद्रबिंदु और रेफ होती है। कई भाषाओं में 'कैथी लिपि' में प्रश्नवाचक, अल्पविराम और पूर्ण विराम चिह्न नहीं होता और 'देवनागरी लिपि' में प्रश्नवाचक, अल्पविराम और पूर्ण विराम चिह्न होता है।

हिंदी दिवस, तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं वर्ष 2023 में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

संदर्भ – माननीय सचिव श्रीमती अंशुली आर्य, आईएएस, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का 01 जून, 2023 का अर्ध शासकीय पत्र सं. 11034/06/2023 राजभाषा (नीति)।

पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का संयुक्त आयोजन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी की अध्यक्षता में 14 सितंबर, 2023 को हिंदी दिवस तथा 14 एवं 15 सितंबर, 2023 को तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का सम्मिलित आयोजन पुणे (महाराष्ट्र) में किया जाएगा।

हिंदी का उत्साहवर्धक वातावरण सृजित करने और इस कार्यक्रम में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी की गरिमामयी उपस्थिति को देखते हुए यह अनुरोध किया गया है कि सभी मंत्रालय/विभाग/संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालय/बैंक/उपक्रम/निगम/बोर्ड आदि हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम 14 से 29 सितंबर के दौरान ही मनाना सुनिश्चित करें और विभिन्न प्रतियोगिताएं इसी अवधि के दौरान आयोजित करें। कार्यक्रम की रूपरेखा इस प्रकार बनाई जाए कि प्रत्येक कार्यालय के हिंदी दिवस का शुभारंभ 14 सितंबर, 2023 को पुणे, महाराष्ट्र से हो और समापन 29 सितंबर, 2023 को संबंधित कार्यालय में हो। मंत्रालयों/विभागों आदि में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न प्रतियोगिताएं 16 सितंबर के बाद संपन्न कराई जाए। अपरिहार्य स्थिति में ये प्रतियोगिताएं 01 से 13 सितंबर, 2023 के मध्य आयोजित की जा सकती है।

अनुरोध किया गया है कि अपने मंत्रालय/विभाग के राजभाषा से जुड़े सभी अधिकारियों/अनुवादकों एवं मंत्रालय के कुछ अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को पुणे में होने वाले हिंदी दिवस एवं तीसरे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में अनिवार्य रूप से सम्मिलित होने का निर्देश दिए जाएं।

(संबंधित विस्तृत जानकारी राजभाषा विभाग की वेबसाइट rajbhasha.gov.in से प्राप्त की जा सकती है एवं प्रतिभागिता करने के लिए इसी वेबसाइट पर ऑनलाइन पंजीकरण कराना आवश्यक है)।

ग्रीन हाइड्रोजन–भविष्य का ईंधन

लेख

रोचक तथ्य, संभावनाएं एवं चुनौतियां

आशुतोष कुमार आनंद
वरि. प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)
निदेशक (कार्मिक) सचिवालय, ऋषिकेश

ऊर्जा आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए एक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण निवेश है। विद्युत उत्पादन मानवीय विकास में अहम भूमिका अदा करता है। हालाँकि, इस विकास की एक बड़ी कीमत पर्यावर्णीय नुकसान, मौसम में बदलाव एवं ग्लोबल वार्मिंग के रूप में अब परिलक्षित हो रहा है। सामाजिक विकास की वर्तमान प्रक्रिया में प्राकृतिक स्रोतों के समुचित उपयोग के साथ–साथ पर्यावरण की सुरक्षा करना अत्यावश्यक है। समूचे संसार में चलने वाली विकास योजनाओं ने प्रत्येक स्तर पर पर्यावरण को बदल दिया है। विकास प्रक्रिया सदैव किसी न किसी प्रकार के प्रदूषण से जुड़ी है।

अनियोजित विकास की प्रक्रिया से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है तथा व्यापक पैमाने पर विपत्तियाँ आती हैं। ताप विद्युत गृहों में ईंधन के दहन से विनाशकारी गैस एवं ठोस पदार्थ निकलते हैं जो पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। जलविद्युत (हाइड्रो पावर) को मोटे तौर पर जीवाश्म ईंधन (फॉसिल फ्यूल्स) से उत्पन्न बिजली की तुलना में पर्यावरण के लिए अधिक अनुकूल माना जाता है, और कई मामलों में यह सच भी है। लेकिन एक नवीन अध्ययन में कहा गया है कि जलविद्युत परियोजनाओं का जलवायु पर प्रभाव पूरी दुनिया में अलग–अलग होता है। कुछ जलविद्युत परियोजनाओं में जीवाश्म ईंधन को जलाने की तुलना में अधिक ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है।

हाइड्रोजन एनर्जी : एक विकल्प : आज समूचे विश्व में इन नुकसानों को कम करने और विद्युत उत्पादन के स्वच्छ विकल्पों पर गहन चर्चा एवं कोशिश हो रही है। हाइड्रोजन एनर्जी भी एक ऐसा ही विकल्प है। हाइड्रोजन एक ऐसा तत्व है जो पृथ्वी पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अतः इसका उपयोग स्वच्छ ईंधन के लिये वैकल्पिक तौर पर किया जा सकता है। भविष्य में स्वच्छ ईंधन के प्रयोग एवं बिजली की उच्चतम मांग को पूरा करने के लिये सरकार द्वारा हाइड्रोजन ईंधन के उत्पादन की दिशा में कार्य करने पर अब विशेष बल दिया जा रहा है । दुनिया भर में ग्रीन हाइड्रोजन को लेकर होड़ शुरू हो चुकी है। भारत में भी सरकार नेशनल हाइड्रोजन मिशन के तहत कुछ क्षेत्रों के लिए ग्रीन हाइड्रोजन का इस्तेमाल अनिवार्य करने पर विचार कर रही है।

क्या है ग्रीन हाइड्रोजन : ग्रीन हाइड्रोजन शक्तिशाली फ्यूल है, यह शून्य उत्सर्जन के साथ भारी मशीनों को चलाने में सहायक होगा, जो सौर और पवन ऊर्जा से नहीं चल पाती हैं। यह कार्बन मुक्त ईंधन पानी से तैयार किया जाएगा। इसके लिए अक्षय ऊर्जा स्रोतों से तैयार बिजली से हाइड्रोजन और ऑक्सीजन अणुओं को अलग किया जाएगा। यह आम ईंधन के मुकाबले तीन गुना तक ऊर्जा देता है। स्वच्छ वैकल्पिक ईंधन विकल्प के लिये हाइड्रोजन पृथ्वी पर सबसे प्रचुर तत्वों में से एक है। हाइड्रोजन का प्रकार उसके बनने की प्रक्रिया पर निर्भर करता है। ग्रीन हाइड्रोजन अक्षय ऊर्जा (जैसे सौर, पवन) का उपयोग करके जल के इलेक्ट्रोलिसिस द्वारा निर्मित होता है और इसमें कार्बन फुटप्रिंट कम होता है। इसके तहत विद्युत द्वारा जल (H_2O) को हाइड्रोजन (H) और ऑक्सीजन (O_2) में विभाजित किया जाता है। ब्राउन हाइड्रोजन का उत्पादन कोयले का उपयोग करके किया जाता है जहाँ उत्सर्जन को वायुमंडल में निष्कासित किया जाता है। ग्रे हाइड्रोजन (Grey Hydrogen) प्राकृतिक गैस से उत्पन्न होता है जहाँ संबंधित उत्सर्जन को वायुमंडल में निष्कासित किया जाता है। ब्लू हाइड्रोजन (Blue Hydrogen) प्राकृतिक गैस से उत्पन्न होती है, जहाँ कार्बन कैप्चर और स्टोरेज का उपयोग करके उत्सर्जन को कैप्चर किया जाता है।

ग्रीन हाइड्रोजनः भारतीय परिदृश्य : ग्रीन हाइड्रोजन' भारत को स्वच्छ ऊर्जा की ओर ले जा सकता है, साथ ही यह देश में जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने में भी मददगार हो सकता है। पेरिस जलवायु समझौते के तहत भारत ने वर्ष 2005 के स्तर से वर्ष 2030 तक अपनी अर्थव्यवस्था की उत्सर्जन तीव्रता को 33–35% तक कम करने की

प्रतिबद्धता जाहिर की है। भारत में ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन हेतु एक अनुकूल भौगोलिक स्थिति, धूप और वायु की प्रचुर मात्रा विद्यमान है। ग्रीन हाइड्रोजन प्रौद्योगिकियों को उन क्षेत्रों में बढ़ावा दिया जा रहा है जहां प्रत्यक्ष विद्युतीकरण संभव नहीं है।

भारत में ग्रीन हाइड्रोजन बनाने के इंफ्रास्ट्रक्चर की जहां तक बात है तो यहां 1970 से ही एक स्थापित व्यवस्था है। भारत में 1970 के दशक में ग्रीन हाइड्रोजन पर काम शुरू हुआ था जिसमें अच्छी सफलता मिली थी। भारत में 1970 में फर्टिलाइजर कॉरपोरेशन बना था जो बाद में एनएफएल के तौर पर परिवर्तित कर दिया गया। एनएफएल के पास उस वक्त एक ग्रीन पॉवर प्लांट था जो भाखड़ा नांगल बांध से जुड़ा था। भाखड़ा के पानी को उपयोग में लेने के लिए एक वाटर इलेक्ट्रोलीसिस प्लांट बनाया गया था। शुरू में इस प्लांट से ग्रीन हाइड्रोजन बनाया जाता था, लेकिन बाद में नाइट्रोजन बनाया जाने लगा जो कि ग्रीन एनर्जी का ही एक हिस्सा था। यह नाइट्रोजन गैस भी पानी से बनती थी, इसलिए इससे पैदा होने वाली बिजली ग्रीन एनर्जी की श्रेणी में दर्ज थी। आईआईटी, दिल्ली के वैज्ञानिकों ने बहुत कम लागत में पानी से हाइड्रोजन ईंधन को अलग करने की तकनीक खोज निकाली है। आईआईटी दिल्ली के प्रोफेसर और स्टूडेंट्स की एक टीम ने हाइड्रोजन प्रोडक्शन पायलट प्लांट में ईंधन बनाकर तैयार कर लिया है। वहीं, वाराणसी स्थित आईआईटी–बीएचयू में सेरामिक इंजीनयरिंग विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रीतम सिंह ने फसलों के अवशेष (पराली–पुआल, गेहूं, गन्ने का छिलका और काष्ठ अवशेष आदि) से दुनिया का सबसे शुद्ध हाइड्रोजन ईंधन बनाया है।

यह ग्रीन हाइड्रोजन पूरी तरह से कार्बन मुक्त होगी। यह गैस प्रदूषण मुक्त होगी। इससे पैदा होने वाली ग्रीन हाइड्रोजन गैस से रिफाइनिंग सेक्टर, फर्टीलाइजर सेक्टर, एविएशन सेक्टर और यहां तक कि स्टील सेक्टर में भी ऊर्जा की सप्लाई कर सकेंगे । अभी इन क्षेत्रों में तेल या गैस आधारित ऊर्जा लगती है जिसमें प्रदूषण बहुत ज्यादा होता है। देश में रिन्यूएबल एनर्जी की कॉस्टिंग काफी कम है। जैसा कि सोलर एनर्जी पर प्रति यूनिट 2 रुपये से कम लागत आती है! ऐसे में रिन्यूएबल एनर्जी के इस्तेमाल से ग्रीन हाइड्रोजन पैदा करना आसान और सस्ता होगा।

भारत में फिलहाल हाइड्रोजन फ्यूल तैयार करने के लिए दो टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल हो रहा है। पहली तकनीक में पानी के इलेक्ट्रोलिसिस से हाइड्रोजन गैस पैदा की जाती है। इसमें पानी से हाइड्रोजन को अलग किया जाता है। दूसरी टेक्नोलॉजी में प्राकृतिक गैस से हाइड्रोजन और कार्बन को तोड़कर अलग किया जाता है। इसमें हाइड्रोजन को ले लेते हैं और बचे कार्बन का इस्तेमाल ऑटो, इलेक्ट्रॉनिक और एरोस्पेस सेक्टर में किया जाता है। देश में पहली बार फरवरी 2021 के बजट में हाइड्रोजन मिशन का ऐलान किया गया था। इंडियन ऑयल और कई बड़ी कंपनियां इस मिशन में बड़ा निवेश करने का ऐलान कर चुकी हैं ! भारत की जितनी बड़ी सरकारी कंपनियां जैसे भारत पेट्रोलियम, इंडियन ऑयल, ओएनजीसी और एनटीपीसी इस दिशा में आगे बढ़ गई हैं। प्राइवेट कंपनियों में टाटा, रिलायंस, अडाणी जैसी कंपनियां भी निवेश शुरू कर चुकी है। नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने दिल्ली से जयपुर के लिए हाइड्रोजन से चलने वाली बस को शुरू करने की बात कही है। आईआईटी और देश की बड़ी–बड़ी रिसर्च कंपनियां हाइड्रोजन एनर्जी के शोध में लग चुकी हैं। साल 2047 यानी कि भारत की आजादी की शताब्दी पर देश को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। देश में बड़े पैमाने पर ग्रीन हाइड्रोजन के निर्माण के साथ इसके निर्यात की भी योजना है।

नेशनल हाइड्रोजन मिशनः भारत में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने नेशनल हाइड्रोजन मिशन का ऐलान किया है। उनकी घोषणा के बाद कई कंपनियों ने ग्रीन हाइड्रोजन बनाने और इस्तेमाल करने की तैयारी शुरू कर दी है। इन कंपनियों में रिलायंस, टाटा और अडाणी के नाम शामिल हैं । यहां तक कि सरकारी कंपनी इंडियन ऑयल और एनटीपीसी ने ग्रीन हाइड्रोजन इस्तेमाल करने का वादा कर दिया है। प्रधानमंत्री जी ने इस बार के स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में ग्रीन हाइड्रोजन का जिक्र किया और भारत को इसे दुनिया का हब बनाने का लक्ष्य रखा। प्रधानमंत्री के मुताबिक आने वाले समय में भारत को ग्रीन हाइड्रोजन निर्यात के क्षेत्र में अव्वल राष्ट्र बना देना है जिसके लिए सरकार तैयारी कर

रही है। माना जा रहा है कि आने वाले समय में ग्रीन हाइड्रोजन पेट्रोल–डीजल के मुकाबले सबसे स्वच्छ ऊर्जा का स्रोत बनेगा जिसमें प्रदूषण न के बराबर होगा और इसका निर्माण भी बेहद आसान होगा।

सरकार ने नई ग्रीन हाइड्रोजन पॉलिसी (Green Hydrogen Policy) बनाई है एवं ग्रीन हाइड्रोजन और ग्रीन अमोनिया पॉलिसी को नोटिफाई किया है इस पॉलिसी की मदद से सरकार 2030 तक डोमेस्टिक ग्रीन हाइड्रोजन प्रोडक्शन को 5 मिलियन टन तक पहुंचाना चाहती है। लॉन्ग टर्म में सरकार का मकसद भारत को क्लीन फ्यूल का एक्सपोर्टर बनाना है। इसके साथ ही अब हरित हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए उपयोग की जाने वाली अक्षय ऊर्जा के फ्री–व्हीलिंग की अनुमति मिल गई। सरकार जीवाश्म ईंधन से हरित हाइड्रोजन/हरित अमोनिया में संक्रमण को सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न उपाय कर रही है।

अधिसूचना में कहा गया है, हर तरह से पूर्ण आवेदन प्राप्त होने के 15 दिनों के भीतर हरित हाइड्रोजन/ग्रीन अमोनिया संयंत्रों को अक्षय ऊर्जा की सोर्सिंग के लिए ओपन एक्सेस प्रदान किया जाएगा। केंद्रीय बिजली मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना में कहा गया है कि ग्रीन हाइड्रोजन/ग्रीन अमोनिया को अक्षय ऊर्जा का उपयोग करके पानी के इलेक्ट्रोलिसिस के माध्यम से उत्पादित हाइड्रोजन/अमोनिया के रूप में परिभाषित किया जाएगा। सरकार को इस क्षेत्र में सब्सिडी भी देनी होगी ताकि कंपनियां शोध एवं विकास के लिए आगे आएं।

2070 तक नेट जीरो का लक्ष्य हासिल करने के लिए भारत ने ऊर्जा रूपांतरण की दिशा में तेजी से कार्य शुरू कर दिया है। पहले एक–एक कर राज्यों को नेट जीरो बनाया जायेगा और उन्हें हरित राज्य घोषित किया जायेगा। इसकी शुरूआत हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड तथा पूर्वोत्तर के छोटे राज्यों से होगी जहां उत्सर्जन बहुत कम है तथा कार्बन सोखने की क्षमताएं बहुत ज्यादा हैं।

नीति निर्माताओं को इस तकनीक पर कार्य करने वाली संस्थाओं को प्रारंभिक चरण में निवेश की सुविधा प्रदान करनी होगी और भारत में ग्रीन हाइड्रोजन से जुड़ी प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाने के लिये आवश्यक अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित करना होगा। इसके लिये सरकार को तो आगे आना ही होगा साथ ही निजी क्षेत्र को भी भविष्य के लिये ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये आगे आना होगा। भारत को घरेलू विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करना होगा। एंड–टू–एंड इलेक्ट्रोलाइजर (End to End Electrolyser) विनिर्माण सुविधा की स्थापना के लिये उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना जैसे उपायों की आवश्यकता होगी। इसके लिये एक मजबूत विनिर्माण रणनीति की भी आवश्यकता है जो उपलब्ध संसाधनों का लाभ उठा सके और वैश्विक मूल्य श्रृंखला के साथ एकीकरण करके इससे जुड़े खतरों को कम कर सके। भारत अपने सस्ते नवीकरणीय ऊर्जा शुल्कों के कारण वर्ष 2030 तक ग्रीन हाइड्रोजन का शुद्ध निर्यातक बन सकता है।

चुनौतियांः हाइड्रोजन ऊर्जा उत्पादन की राह में चुनौतियां भी कम नहीं। जहां तक तुलना की बात है तो एक किलो हाइड्रोजन में एक लीटर डीजल से करीब तीन गुना अधिक ऊर्जा होती है। परंतु हल्की होने के कारण सामान्य घनत्व पर एक किलो हाइड्रोजन को 11,000 लीटर जगह चाहिए, जबकि एक किलो डीजल को लगभग एक लीटर। इसके भंडारण और वितरण के लिए इसे विशेष टैंकों में संकुचित करके रखना होगा या फिर 250 डिग्री सेल्सियस ऋणात्मक दर पर तरल बनाना होगा। यह प्रक्रिया सीएनजी और एलपीजी के प्रबंधन से कहीं अधिक जटिल होती है।

आर्थिक स्थिरताः ग्रीन हाइड्रोजन के प्रयोग से उत्पन्न होने वाली आर्थिक स्थिरता व्यावसायिक रूप से हाइड्रोजन का उपयोग करने पर उद्योग द्वारा सामना की जाने वाली सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

- परिवहन ईंधन सेल्स (Transportation Fuel Cells) के लिये हाइड्रोजन को प्रति मील के आधार पर पारंपरिक ईंधन और प्रौद्योगिकियों के साथ लागत–प्रतिस्पर्धी होना चाहिये।
- उच्च लागत और सहायक बुनियादी ढांचे की कमी।

- ईंधन सेल (Fuel cells) तकनीकी जिसका उपयोग कारों में प्रयोग होने वाले हाइड्रोजन ईंधन को ऊर्जा में परिवर्तित करने हेतु किया जाता है, अभी भी महँगे हैं।
- कारों में हाइड्रोजन ईंधन भरने हेतु आवश्यक हाइड्रोजन स्टेशन का बुनियादी ढाँचा अभी भी व्यापक रूप से विकसित नहीं है।

कुछ देशों द्वारा की गई पहलः एशिया–प्रशांत उप–महाद्वीप में जापान और दक्षिण कोरिया हाइड्रोजन नीति बनाने के मामले में पहले पायदान पर हैं। वर्ष 2017 में जापान ने बुनियादी हाइड्रोजन रणनीति तैयार की, जो इस दिशा में वर्ष 2030 तक देश की कार्ययोजना निर्धारित करती है और जिसके तहत एक अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखला की स्थापना भी शामिल है। दक्षिण कोरिया अपनी 'हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था विकास और हाइड्रोजन का सुरक्षित प्रबंधन अधिनियम, 2020' के तत्वावधान में हाइड्रोजन परियोजनाओं तथा हाइड्रोजन फ्यूल सेल (Hydrogen Fuel Cell) उत्पादन इकाइयों का संचालन कर रहा है। दक्षिण कोरिया ने 'हाइड्रोजन का आर्थिक संवर्धन और सुरक्षा नियंत्रण अधिनियम' भी पारित किया है, जो तीन प्रमुख क्षेत्रों – हाइड्रोजन वाहन, चार्जिंग स्टेशन और फ्यूल सेल से संबंधित है। इस कानून का उद्देश्य देश के हाइड्रोजन मूल्य निर्धारण प्रणाली में पारदर्शिता लाना है।

सुरक्षा एवं भंडारण से जुडे सवालः ग्रीन हाइड्रोजन के तमाम फायदे हैं पर इससे सुरक्षा से जुड़ी कुछ सावधानियां बरतनी होंगी । हाइड्रोजन बहुत अधिक ज्वलनशील होती है। यानी अगर डीजल–पेट्रोल का टैंक लीक हो जाए तो वह जमीन पर फैल जाएगा, लेकिन हाइड्रोजन टैंक में एक छोटी सी चिंगारी या लीक का अंजाम भयानक हो सकता है।

पेट्रो पदार्थों की तुलना में हाइड्रोजन की प्रोडक्शन कॉस्ट भी अभी काफी ज्यादा है। ज्वलनशीलता और बहुत कम ताप पर रखे जाने की मजबूरी के चलते इसकी सेफ सप्लाई और भंडारण आज भी एक मुश्किल काम है। 2011 में जापान में भूकंप आया और सूनामी आई। इसकी वजह से फुकुशिमा न्यूक्लियर पावर स्टेशन में हाइड्रोजन की वजह से एक बड़ा धमाका हुआ, जिससे रेडियोएक्टिव लीकेज हुआ। लाखों लोगों को वहां से हटाया गया और अभी भी उसका असर देखने को मिलते हैं। 1986 में चर्नोबिल परमाणु दुर्घटना ने भी हजारों लोगों की जान ले ली थी।

आगे की राहः

- **ग्रीन हाइड्रोजन और इलेक्ट्रोलाइजर क्षमता के लिये राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित करनाः** भारत में जीवंत हाइड्रोजन उत्पाद निर्यात उद्योग जैसे कि ग्रीन स्टील (वाणिज्यिक हाइड्रोजन स्टील प्लांट) के निर्माण हेतु चरणबद्ध निर्माण कार्यक्रम का उपयोग किया जाना चाहिये।
- **पूरक समाधान लागू कर सुदृढ़ चक्र (Virtuous Cycles) बनानाः** उदाहरण के लिये हवाई अड्डों पर ईंधन भरने, ऊर्जा प्रदान करने और विद्युत उत्पन्न करने के लिये हाइड्रोजन बुनियादी ढाँचा स्थापित किया जा सकता है।
- **विकेंद्रीकृत उत्पादनः** विकेंद्रीकृत हाइड्रोजन उत्पादन को एक इलेक्ट्रोलाइजर (जो बिजली का उपयोग करके H_2 और O_2 बनाने हेतु पानी को विभाजित करता है) के लिये अक्षय ऊर्जा की खुली पहुँच के माध्यम से बढ़ावा दिया जाना चाहिये।
- **वित्त प्रदान करनाः** नीति निर्माताओं को भारत में उपयोग हेतु प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाने के लिये प्रारंभिक चरण के पायलट स्तर और अनुसंधान एवं विकास में निवेश की सुविधा प्रदान करनी चाहिये।

निष्कर्षः कुछ महीने पहले माननीय केंद्रीय मंत्री (विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा) भारत सरकार द्वारा टीएचडीसीआईएल को 'राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन' के तहत 'हरित हाइड्रोजन' के क्षेत्र में विविधीकरण के लिए और उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में व्यावसायिक स्तर पर 800 मेगावाट क्षमता की ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन और भंडारण परियोजना विकसित करने के लिए खुशी जताई गयी । जलवायु परिवर्तन के खतरे को देखते हुए ग्रीन हाइड्रोजन से जुड़ी तकनीकों को प्रोत्साहित करना आवश्यक हो जाता है। ऊर्जा के इस विकल्प पर उल्लेखनीय कार्य करके भारत हाइड्रोजन तकनीक और उससे जुड़े अनुसंधान एवं विकास जैसे मुद्दों पर विश्व का नेतृत्व कर सकता है।

अच्छे संचार की विशेषताएं एवं लाभ

लेख

आर. पी. रतूड़ी
वरिष्ठ प्रबंधक (एम.पी.एस.), ऋषिकेश

एक उत्कृष्ट संचारक (Communicator) होने के नाते न केवल आपको अपने कैरियर में बल्कि आपके दैनिक जीवन में भी मदद मिलती है। अपने संचार कौशल में सुधार से अधिक सार्थक रिश्ते, समझ, कैरियर की सफलता और उत्पादकता प्राप्त हो सकती है। कार्यस्थल में कुशलता से संवाद करने में सक्षम होना सुनिश्चित करता है कि आप अपनी टीम के सदस्यों और उनके लक्ष्यों को समझें। यह आपको अपनी पेशेवर जरूरतों और भावनाओं को व्यक्त करने की अनुमति भी दे सकता है। नियोक्ता भी अकसर ऐसे उम्मीदवारों को पसंद करते हैं जो कुशल संचारक हों। किस संचार कौशल को अपने रिज्यूम में, कवर लेटर और जॉब इंटरव्यू में सूचीबद्ध करना है, यह जानने से आपको आवेदन प्रक्रिया में लाभ प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

अच्छे संचारकों के 19 लक्षण : कुशल संचारक अकसर उन विशेषताओं को साझा करते हैं जो उन्हें लिखित, मौखिक और अशाब्दिक संचार का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की अनुमति देती हैं। सफल संचारकों में प्रायः निम्न गुण होते हैं:

1. **अच्छा श्रोता** (Good listener) : संचार में आम तौर पर बातचीत में सक्रिय होने के लिए दो या दो से अधिक पक्षों की आवश्यकता होती है। दूसरों को सुनने से संबंध बनाने और समझ सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है। जब दूसरे बोल रहे हों या आपके साथ संवाद कर रहे हों, उनको सक्रिय रूप से सुनने से आप दर्शाते हैं कि आप उनका सम्मान करते हैं और यह आपको वक्ता या बातचीत के विषय के बारे में और अधिक जानने की अनुमति देते हैं।

2. **संक्षिप्त** (Concise) : अपने संचार में प्रत्यक्ष और स्पष्ट होने से आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आप अपने इरादे सही तरीके से व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी नए कर्मचारी को कोई प्रक्रिया समझा रहे हैं, तो स्पष्ट, सीधे चरणों में बात करने से उन्हें जल्दी सीखने में मदद मिल सकती है। क्लाइंट्स और सहकर्मियों के साथ बात करते समय आप कितना समय ले रहे हैं, इसके बारे में जागरूक होना भी महत्वपूर्ण है। यदि कोई व्यस्त दिखाई देता है, तो संक्षिप्त रूप में बात करने से पता चलता है कि आप उनके वक्त का सम्मान करते हैं।

3. **सहानुभूतिपूर्ण** (Empathetic) : दूसरों के साथ सहानुभूति रखने से आपको कार्यस्थल पर विश्वास और संबंध बनाने में मदद मिल सकती है। जब किसी सहकर्मी या कर्मचारी को परेशानी हो रही हो तो उनको समझने की कोशिश करें और अपनी सहानुभूति व्यक्त करें। दूसरों को यह बताना कि आप उनकी भलाई के बारे में परवाह करते हैं, आपको अधिक पहुंच योग्य भी बना सकता है, जो कि दूसरों को आपके साथ संचार जारी रखने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। कठिनाइयों के समाधान में आपका सहानुभूतिपूर्ण होना भी बहुत उपयोगी है क्योंकि यह आपको दूसरों की भावनाओं का एहसास करवाता है और उनकी क्रियाओं को समझने की शक्ति प्रदान करता है।

4. **आत्मविश्वास** (Confident): अपने संचार में विश्वास रखने से एक पेशेवर के रूप में आपकी विश्वसनीयता बढ़ सकती है। यह आपकी आवश्यकताओं को ठीक से संप्रेषित करने में भी आपकी मदद कर सकता है। अपनी शब्दावली का विस्तार करने पर विचार करें और जब भी आप इस बारे में अनिश्चित हों कि क्या कहना है, रुकें। इससे आपको अपने विचारों को याद रखने और स्पष्ट रूप से बोलने में मदद मिल सकती है।

5. **मिलनसार** (Friendly) : मैत्रीपूर्ण लहजे में बोलना और लिखना दूसरों को आपके साथ अधिकाधिक संवाद करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। जब आप मौखिक बातचीत और ईमेल जैसे संदेशों में संवाद करते हैं तो लोगों का अभिवादन करने पर विचार करें। यदि आप जानते हैं तो व्यक्ति के नाम का उपयोग करें, और दूसरों के साथ या फोन पर बातचीत करते समय सकारात्मक और मैत्रीपूर्ण रहें।

6. **चौकस** (Observant) : अशाब्दिक संचार, जैसे शरीर की भाषा, संचार का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। अपने सहकर्मियों और क्लाइंट्स की शारीरिक भाषा को पहचानने से आपको यह जानकारी मिल सकती है कि वे कैसा महसूस कर रहे हैं। यह आपको यह निर्धारित करने में भी मदद कर सकता है कि वे आपके अपने आचरण के बारे में कैसा महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति के साथ अनौपचारिक बातचीत कर रहे हैं जो तनावमुक्त लगता है, तो आपका व्यवहार भी शायद तनावमुक्त हो। बॉडी लैंग्वेज सहित अपने स्वयं के संचार में उद्देश्यपूर्ण होने से दूसरों को भी आपकी आवश्यकताओं और इरादों को समझने में मदद मिल सकती है।

7. **प्रशंसनीय** (Appreciative): दूसरों को यह व्यक्त करने से कि आप उनके कार्यों के लिए आभारी हैं, आपकी टीम को प्रेरित करने और उनके कौशल में सुधार करने में मदद कर सकता है। मौखिक सकारात्मक सुदृढीकरण प्रदान करने से यह सुनिश्चित करने में भी मदद मिल सकती है कि जिस व्यक्ति की आप प्रशंसा कर रहे हैं या धन्यवाद दे रहे हैं, वह अपने अच्छे व्यवहार को जारी रखेगा। आपके प्रशंसा व्यक्त करने से भी समस्याओं का समाधान करने में मदद मिल सकती है। यदि एक साथी पेशेवर ने गलती की है, तो उन्होंने जो सही ढंग से किया है उसके लिए सराहना के साथ रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करने से शांतिपूर्ण और उत्पादकता पूर्ण कार्य वातावरण बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

8. **विनम्र** (Polite) : आपके लिखित, मौखिक और गैर–मौखिक संचार में विनम्र होने से यह सुनिश्चित हो सकता है कि आपके इरादे स्पष्ट हैं। बातचीत शुरू करते समय दूसरों का अभिवादन करने पर विचार करें, सक्रिय रूप से सुनें और दूसरों के साथ बातचीत करते समय अच्छे व्यवहार का उपयोग करें। यह एक उत्कृष्ट प्रतिष्ठा भी स्थापित कर सकता है और दूसरों को भी आपके साथ विनम्रता से पेश आने के लिए आमंत्रित करता है।

9. **संगठित** (Organised): अपने बोलने के बिंदु, ईमेल और संचार के अन्य रूपों को व्यवस्थित करने का प्रयास करें ताकि अन्य लोग बातचीत के आपके इच्छित उद्देश्य को समझ सकें। आप विषय पर रहकर और अपनी बातचीत और संदेशों के लिए एक उद्देश्यपूर्ण संरचना बनाकर एक स्पष्ट और संगठित तरीके से संवाद कर सकते हैं।

10. **ईमानदार** (Sincere) : जब आप दूसरों के साथ संवाद करते हैं तो वास्तविक होने से विश्वास और सम्मान की भावना पैदा हो सकती है। ईमानदारी से बोलने में अपनी भावनाओं और विचारों को साझा करना शामिल है, जो दूसरों के साथ स्पष्ट और सार्थक बातचीत को प्रोत्साहित कर सकता है।

11. **अच्छा निर्णय** (Good Judgement) : दूसरों के साथ संवाद करने के लिए उचित तरीका और समय तय करने में सक्षम होने से शांतिपूर्ण और प्रभावी बातचीत सुनिश्चित हो सकती है। उस बातचीत पर विचार करें जो आप करना चाहते हैं और अपने संदेश के लिए सही माध्यम सुनिश्चित करें। उदाहरण के लिए, यदि आपको गोपनीय जानकारी पर चर्चा करने की आवश्यकता है, तो व्यक्तिगत रूप से एक निजी बातचीत शायद सबसे अच्छी होगी। आप शायद मीटिंग शेड्यूल कर सकते हैं या ईमेल या फोन पर बातचीत के जरिए स्टेट्स अपडेट मांग सकते हैं।

12. **आदरणीय** (Respectful): आपके संचार के दौरान सम्मान दिखाने में विनम्र और चौकस रहना शामिल है। जिस व्यक्ति से आप बात कर रहे हैं, उसके प्रति अपना सम्मान व्यक्त करने के लिए, उन्हें उत्तर देने से पहले अपनी बात समाप्त करने दें। सक्रिय रूप से दूसरे को सुनना भी दिखा सकता है कि आप उनका और उनकी बातों का सम्मान करते हैं। दूसरों को सुनते समय, उनके शब्दों पर विचार करें और देखें कि क्या आप उन्हें अपनी प्रतिक्रिया पर लागू कर सकते हैं।

13. **संगत**(Consistent): सतत संचारक दूसरों के साथ नियमित रूप से बातचीत करते हैं। संचार का एक अनुमानित और विश्वसनीय चैनल स्थापित करने से दूसरों को अच्छी तरह से सूचित रखने और कार्य संबंधों को बनाए रखने में मदद मिल सकती है। एक समय सीमा और तरीका बनाने पर विचार करें जिसमें आप दूसरों को जवाब दें या बातचीत के लिए उपलब्ध हों। उदाहरण के लिए, यदि आप ऑनलाइन त्वरित संदेशों का त्वरित उत्तर देते हैं,

तो आप दूसरों को इस विधि का उपयोग करके आपसे संपर्क करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं यदि उन्हें तत्काल उत्तर की आवश्यकता हो।

14. **धारणशील** (Retentive): ध्यान देने योग्य होने का मतलब है कि आप दूसरों के साथ पिछली बातचीत के विवरण और प्रतिक्रियाओं को अच्छी तरह याद रख सकते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए एक उपयोगी कौशल है कि आपका संचार कुशल और व्यक्तिगत है। यदि आपके सहकर्मी और क्लाइंट्स आपको अपने बारे में व्यक्तिगत जानकारी बताते हैं, तो इसे याद रखने की कोशिश करें ताकि आप बाद में उनसे इसके बारे में पूछ सकें। यह आपको अन्य पेशेवरों के साथ बॉन्डिंग में मदद कर सकता है और मजबूत कार्यस्थल मित्रता का निर्माण कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका सहकर्मी अक्सर अपनी व्यक्तिगत बातों या शौक के बारे में बात करता है, तो आप एक आकस्मिक बातचीत के दौरान इसके बारे में पूछ सकते हैं, जिससे पता चलता है कि आप उसे सुनते हैं और उसके साथ बेहतर संबंध बनाना चाहते हैं।

15. **जिज्ञासु** (Inquisitive) : विस्तृत और विचारशील प्रश्न पूछने से आप नई चीजें सीख सकते हैं और निर्देशों को स्पष्ट करने में मदद मिल सकती है। कुशल संचारक अक्सर अपेक्षाओं, इरादों और भावनाओं की अपनी समझ को मजबूत करने के लिए प्रश्न पूछते हैं। अक्सर, जब आप किसी कार्य के बारे में अनिश्चित होते हैं तो प्रश्न पूछना अधिक कुशल होता है। एक सार्वजनिक संचार चैनल में प्रश्न पूछना विशेष रूप से प्रभावी होता है क्योंकि यह सुनिश्चित कर सकता है कि आपको तुरंत उत्तर मिल जाए और अन्य लोगों को भी सीखने का अवसर मिल सके जो जिज्ञासु हो सकते हैं।

16. **ईमानदार** (Honest) : महान संचारक अक्सर ईमानदार होने के लिए समर्पित होते हैं। यह अभ्यास आपको एक सकारात्मक प्रतिष्ठा अर्जित करवा सकता है और यह सुनिश्चित कर सकता है कि सभी कार्यस्थल संचार सटीक हैं।

17. **विश्वसनीय** (Reliable) : एक विश्वसनीय कम्युनिकेटर होने का मतलब है कि आपके सहकर्मी और कर्मचारी जरूरत पड़ने पर बातचीत शुरू करने और दूसरों को प्रभावी ढंग से जवाब देने के लिए आप पर भरोसा कर सकते हैं। जब दूसरे आपसे संपर्क करें तो समय पर प्रतिक्रिया देने की कोशिश करें। जब आपको सहायता या स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो तो जल्दी से दूसरों तक पहुँचने पर विचार करें। ये अभ्यास यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं कि आपके कार्यस्थल में प्रभावी संचार हो।

18. **अग्र सक्रिय** (Proactive) : समझदार कम्युनिकेटर विरोधाभासों को समयबद्ध तरीके से संबोधित करता है और जरूरत पड़ने पर बातचीत शुरू करता है। एक सक्रिय संचारक होने से गलतफहमियों को रोकने और एक जिम्मेदार प्रतिष्ठा स्थापित करने में मदद मिल सकती है।

19. **चिंतनशील** (Reflective) : आत्म–प्रतिबिंब संचार का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह आपको बोलने से पहले पूरी तरह से सोचने की अनुमति देता है, जो सुनिश्चित करता है कि आप स्पष्ट रूप से और जानबूझकर संवाद कर रहे हैं। चिंतनशील होने से आपको यह साहस भी मिलता है कि आपके शब्द और हाव–भाव दूसरों को कैसा महसूस करा सकते हैं।

भारत के इतिहास की खोज की कहानी

लेख

प्रशांत चौधरी
वरिष्ठ अधिकारी(मा.सं.), ऋषिकेश

दिलीप द्विवेदी
वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), ऋषिकेश

कार्ल सेगन, "आपको वर्तमान को समझने के लिए इतिहास की समझ होना बहुत जरुरी है"। अकसर यह माना जाता है कि भारतीय सभ्यता शायद पूरी दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यता में से एक है। वर्तमान में भारत का इतिहास और उससे जुड़े किस्से विभिन्न वजहों से चर्चा में रहते हैं। साथ ही दुनियाभर के बाकी देशों में भी वर्तमान में भारतीय संस्कृति और इतिहास के प्रति एक नयी चेतना पैदा हुई है। इस वर्ष भारत एक तरफ अन्तराष्ट्रीय ग्रुप जैसे जी–20 और शंघाई को–ऑपरेशन आर्गेनाइजेशन(एससीओ) की मेजबानी कर रहा है तो दूसरी तरफ हॉकी एवं क्रिकेट विश्वकप की भी मेजबानी कर रहा है। इस वजह से स्वाभाविक है की दुनिया भर से लोग भारत आयेंगे और हमारी संस्कृति एवं इतिहास से रूबरू होंगे। यह लेख लिखे जाने की प्रेरणा भी यहीं से आती है।

देखा जाए तो हिंदुस्तान की हर गली में कोई एतिहासिक कहानी छुपी हुई है। हालाँकि भारत के इतिहास को वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करने एवं लिखने का श्रेय मुख्यतः अंग्रेजों को जाता है। भारत का इतिहास सही तरीके से 18वी शताब्दी के बाद ही लिखा गया, तो यह मुमकिन है कि इतिहास के शायद कई किस्से और साम्राज्य ऐसे भी हो जिनका हमें आज भी पता नहीं है। इसी का एक उदहारण है सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि जिसे आज भी समझा नहीं जा सका है क्योंकि उसमें 400 से 600 संकेतों का प्रयोग किया गया है। अगर आसान भाषा में समझें तो निम्न कारणों से भारत का इतिहास आज भी अज्ञात है–

- अक्सर भारत में ज्ञान के प्रसार हेतु श्रवण एवं श्रुति पद्धति का इस्तेमाल किया जाता था, जिस वजह से चीजो का लिखित में उल्लेख कम मिलता है।
- समय के साथ भारतीय प्राचीन भाषाएं एवं लिपि जैसे प्राकृत, ब्राह्मी,पाली इत्यादि लुप्त होती गयी, जिसकी वजह से लोग इनमें लिखे शिलालेख एवं ताम्रपत्री तक पढ़ नहीं पाते थे।
- निरंतर बाहरी आक्रमण एवं अराजकता के कारण भी एतिहासिक रिकार्ड् एवं स्मारक नहीं मिल पाते।
- प्राचीन समय में दस्तावेज ताड़ के पत्ते पर लिखे जाते थे जिनको लगभग हर शताब्दी के बाद नए पत्ते पर लिखना पड़ता था। ऐसे में अक्सर ये दस्तावेज बाढ़, आग एवं पलायन के साथ नष्ट हो जाते थे।

भारतीय इतिहास की संयोगवश खोज-

अंग्रेजों का मानना था कि भारत में अच्छे से राज करना है तो यहाँ के लोगों को एवं उनकी संस्कृति को समझना जरुरी है। इसी जिज्ञासा के चलते उन्होंने उस चीज पर ध्यान दिया जो शायद लोकल लोग नहीं देख पाए। ऐसी ही एक और कहानी है जब पंजाब प्रान्त में अंग्रेजों ने संयोग से ही सिन्धु घाटी सभ्यता की खोज कर ली थी। कहा जाता है कि पंजाब प्रान्त में रेलवे लाइन डालते हुए बहुत से अवशेष एवं सामान जमीन से निकलते थे। एक दिन अचानक ही किसी अंग्रेज अधिकारी का ध्यान इस और गया और उसके शोध करने पर सिन्धु–घाटी सभ्यता की खोज हुई, और इसी कड़ी को आगे बढ़ाने के लिए सन् 1861 में पुरातत्व विभाग की स्थापना की गयी।

इसी प्रकार राजस्थान के मेवाड़ साम्राज्य में जब सन् 1818 में पहले पोलिटिकल एजेंट कर्नल जेम्स टॉड को भेजा गया तो वह मेवाड़ के इतिहास के बारे में जानकर सन्न रह गया। कहा जाता है कि अक्सर गाँवों में घूमते हुए उसे कोई एतिहासिक शिलालेख मिल जाता, तो कभी मंदिरों की दीवारों पर उकरे हुए चित्रों में वीरता की कहानी, इसके अलावा वह लोकल लोक गाथाओं से भी इतना प्रभावित हुआ कि अक्सर वह दरबार छोड़कर घोडा लेकर मेवाड़ में घूमता

रहता। उसने अपने शोध के आधार पर 2 पुस्तकें लिख डाली जो आज भी अमेजन के माध्यम से आप पढ सकते हैं। इसी चीज की वजह से कर्नल जेम्स टॉड को **'राजस्थान के इतिहास का जनक'** माना जाता है।

भारत की अद्‌भुत वास्तुकला— हमारे पूर्वज न केवल शौर्य के प्रतीक थे अपितु अद्‌भुत दुर्ग, मंदिर एवं अन्य वास्तुकला के निर्माता भी थे। कहा जाता है कि दुनिया में सात वंडर हैं पर मेरा मानना है की शायद इससे ज्यादा वंडर तो सिर्फ भारत की वास्तुकला में ही आपको मिल जायेंगे। शुक्रनीति के अनुसार नौ प्रकार के दुर्ग भारत में पाए जाते हैं जिनकी अलग—अलग विशेषता है एक तरफ महाराष्ट्र का भव्य हरिहर दुर्ग जो कि गिरी दुर्ग एवं एक अद्‌भुत ट्रैकिंग का अनुभव भी है। तो दूसरी ओर 36 किलोमीटर लम्बी दीवार वाला कुम्बलगढ़ दुर्ग राजस्थान में पाया जाता है जो महाराणा कुम्भा ने मेवाड़ साम्राज्य की सुरक्षा के लिए 15वीं शताब्दी में बनाया था। बहुत कम लोगों को पता है कि यह दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी दीवार है।

इसी प्रकार बहुत कम लोगों को पता होगा कि महाराष्ट्र में स्थित कैलाश मंदिर के बारे मे जो दुनिया का इकलौता मंदिर है जो ऊपर से नीचे की तरफ उकेरा गया एवं जिसे बनाने में लगभग 200 साल लगे। यह मंदिर एक पहाड़ को काटकर बनाया गया है (मोनोलिथिक)। माना जाता है कि इसे शायद आज की आधुनिक तकनीक से भी बनाया जाना संभव नहीं है। यह सब हमारे पूर्वजों के अद्‌भुत कौशल एवं धैर्य का प्रमाण नहीं तो क्या है। भारत में ऐसी अनेक बहुत रोचक जगह एवं कहानियां हैं। हमने उनमें से कुछ के बारे में लिखने का प्रयास किया है।

अत्यधिक प्रभावी लोगों की 7 आदतें पुस्तक का सारांश

लेखा

अश्वनी आनंद
वरिष्ठ अभियंता (एमपीएस),ऋषिकेश

राघवेंद्र श्रीवास्तव
उप प्रबंधक(एमपीएस),ऋषिकेश

सिद्धांतों में निहित जीवन जीने के तरीके पर स्टीफन कोवे की कालजयी पुस्तक आपको दूसरों की सेवा में सोचने और कार्य करने के लिए प्रेरित करेगी। सिर्फ एक गाइड से अधिक, यह पुस्तक जीवन के किसी भी चरण में व्यक्तिगत प्रतिबिंब के लिए एक साथी बनकर उभरेगी। आइए, अब 7 आदतों के बारे में जानें.....

आदत-1

सक्रिय होना– हम अपने जीवन के प्रभारी हैं। सक्रिय होने के लिए आत्म–जागरूकता का उपयोग करें और अपने निर्णयों की जिम्मेदारी लें। कोवे जिस पहली आदत की चर्चा करते हैं, वह है सक्रिय होना। जो हमें अन्य सभी जानवरों से अलग करता है, वह है मनुष्य के रूप में हमारे अपने चरित्र की जांच करने की हमारी अंतर्निहित क्षमता। यह तय करने के लिए कि हमें और हमारी परिस्थितियों को कैसे देखना है और अपनी प्रभावशीलता को नियंत्रित करना है। सीधे शब्दों में कहें, प्रभावी होने के लिए सक्रिय होना चाहिए। प्रतिक्रियाशील लोग निष्क्रिय रुख अपनाते हैं, उनका मानना है कि दुनिया उनके साथ एक दुर्घटना की तरह है। प्रतिक्रियाशील लोग पीड़ित और स्थिति को हमेशा नियंत्रण से बाहर महसूस करते हैं।

आदत-2

अंत को मान के शुरुआत करो – मन में एक स्पष्ट गंतव्य बना लेने के बाद शुरुआत करें। कोवे का कहना है कि हम अपनी कल्पना का उपयोग यह देखने के लिए कर सकते हैं कि हम क्या बनना चाहते हैं और अपने विवेक का उपयोग यह तय करने के लिए कर सकते हैं कि कौन सी वैल्यूज हमारा मार्गदर्शन करेंगी । इस तरह, हम सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारे द्वारा उठाए जा रहे कदम सही दिशा में हैं।

आदत-3

प्राथमिकता के हिसाब से पहल करें – खुद को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए, हमें पहले चीजों को पहले रखना चाहिए। हमारे पास अपने दिन–प्रतिदिन के उन कार्यों को प्राथमिकता देने का अनुशासन होना चाहिए जो ज्यादा महत्वपूर्ण है, न कि जिसे शीघ्र करना है। हमें किसी भी क्षण अपनी इच्छाओं या आवेगों के बजाय अपने वैल्यूज के अनुसार कार्य करना चाहिए ।

आदत -4

विन–विन सोचो – प्रभावी इंटरडिपेंडेंट रिलेशनशिप स्थापित करने के लिए, हमें विन–विन स्थितियाँ बनाने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए, जो प्रत्येक पक्ष के लिए पारस्परिक रूप से लाभप्रद और संतोषजनक हों। विन–विन प्राप्त करने के लिए हमें सिर्फ परिणामों पर ध्यान केंद्रित करना पड़ता है ना कि विविध समस्याओं या लोगों पर। विन–विन की भावना प्रतिस्पर्धा के माहौल में जीवित नहीं रह सकती। हमें अपनी प्रणाली को अपने लक्ष्यों और वैल्यूज के साथ लाइन–अप करने की आवश्यकता है ताकि विन–विन का समर्थन करने के लिए सिस्टम मौजूद रहे ।

आदत -5

पहले समझने की कोशिश करो, फिर समझे जाने की – सहानुभूतिपूर्वक सुनने के लिए मौलिक बदलाव की आवश्यकता होती है। हम आम तौर पर सबसे पहले समझे जाने की कोशिश करते हैं। ज्यादातर लोग जवाब देने के इरादे से सुनते हैं, समझने के लिए नहीं। किसी भी समय, वे या तो बोल रहे होते हैं या बोलने की तैयारी कर रहे होते हैं। लेकिन अगर हम इस प्रकार की प्रतिक्रिया को सहानुभूतिपूर्ण सुनने के साथ बदलते हैं, तो हम बेहतर ढंग से बातचीत कर सकते हैं। इस बदलाव को करने में समय लगता है, लेकिन समानुभूतिपूर्ण सुनने का अभ्यास करने में लगभग उतना समय नहीं लगता है जितना कि गलतफहमियों को दूर करने और ठीक करने में, या अव्यक्त और अनसुलझी समस्याओं के साथ जीने में लगता है।

आदत -6

तालमेल – दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण में अंतर को समझने और महत्व देने से, हमारे पास तालमेल बनाने का अवसर प्राप्त होता है, जो हमें खुलेपन और रचनात्मकता के माध्यम से नई संभावनाओं को उजागर करने की अनुमति देता है। उदाहरण के लिए, यदि आप दो पौधों को एक साथ लगाते हैं, तो उनकी जड़ें आपस में मिल जाएँगी और मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करेंगी, जिससे दोनों पौधे अपने आप बढ़ने से बेहतर होंगे। तालमेल का वास्तविक सार लोगों के बीच मानसिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक अंतरों को समझना है।

आदत -7

शार्पेन द सा – प्रभावी होने के लिए, हमें शारीरिक, आध्यात्मिक, मानसिक और सामाजिक रूप से खुद को नवीनीकृत करने के लिए समय देना चाहिए। निरंतर नवीनीकरण हमें प्रत्येक आदत का अभ्यास करने की क्षमता को सहक्रियात्मक रूप से बढ़ाने की अनुमति देता है। नवीकरण वह प्रक्रिया है जो हमें विकास और परिवर्तन के द्वारा निरंतर सुधार की ओर बढ़ने के लिए सशक्त बनाती है।

मुक्ति

श्रद्धांजलि

श्रीमती सीमा बिज्लवान
पत्नी श्री जे. पी. बिज्लवान, टिहरी

अक्सर हमारा पहाड़ों में आना होता है। जब भी मैं अपने परिवार के साथ यहां आती हूं तो लगता है कुछ अधूरा सा छोड़ कर जा रही हूं। एक बेचैनी सी रहती है मन में। मेंरे पतिदेव कई बार बोले मुझसे, क्या है तुम्हारे मन में, कुछ कहती क्यों नहीं, मन हल्का हो जाएगा तुम्हारा। अरे कुछ भी नहीं। बोल भी दो ना। वो जो आदमी शाम होते ही सड़कों में चिल्लाता है और गंगा नदी में बड़े–बड़े पत्थर फेंकता है, कौन है वो? जब भी मैं तुम्हारे साथ यहां आती हूं, ये सब देख परेशान हो जाती हूं। मेरे पतिदेव सहज भाव से बोले, जब यहां सुरंग का काम चल रहा था तो तीस मजदूरों का एक ग्रुप उसमें काम कर रहा था। एक हादसा हुआ उसमें उन्नंतीस मजदूर दबकर मर गए। यह अकेला बच गया। वह शायद शाम का समय था। इसीलिए नदी और शाम का वो हादसा, बस इसका दिमाग वहीं रूक गया और ये अपना मानसिक संतुलन खो बैठा। भागो–भागो बचाओ–बचाओ, यही दो शब्द पिछले कई सालों से दोहराता है। किसी को भी नहीं पता, यह कौन है कहां से आया है? आधा जानवर आधा आदमी बनकर रह गया है। मां गंगे न जाने कब इसे मुक्ति देगी। यह सब सुनकर मैं रो पड़ी। इस बार न कोई बेचैनी थी और ना कोई सवाल, बस मां गंगे से प्रार्थना थी कि उस अजनबी के लिए मुक्ति। न जाने कब मुक्ति होती है, हमारे कर्मों की। ये सब हकीकत में देखा है दोस्तों!

पहेली का राज

कहानी

शीला देवी
कनिष्ठ अधिकारी (वाणिज्यिक), ऋषिकेश

एक बादशाह संध्या के समय वेश बदलकर घूमने निकले। उनके साथ कुछ सिपाही थे, जो दूर रहकर उनकी रक्षा करते थे। एक स्थान पर एक इमारत का निर्माण–कार्य चल रहा था। मजदूर कतार में मजदूरी लेने के लिए खड़े थे। एक मजदूर ने अपनी मजदूरी ली, जेब में रखी और गुनगुनाता हुआ चला। बादशाह ने उसे रोक लिया, पूछा, 'मुझसे कुछ बातें करोगे?' 'क्यों नहीं?' मजदूर रुककर बोला, 'कहो, क्या कहना चाहते हो?' 'आओ, उधर पेड़ के नीचे बैठ जाएं। मैं तुम्हारा अधिक समय न लूंगा। मुझे मालूम है पूरा दिन काम करके तुम थक चुके होंगे, बस थोड़ी देर के लिए मेरे साथ बातें करो।' 'ऐसी कोई बात नहीं।' मजदूर हंसकर बोला। 'मैं अभी आठ घंटे और काम कर सकता हूं।' दोनों पेड़ के नीचे जाकर बैठ गए। 'तुम्हें जो मजदूरी मिलती है, क्या वो तुम्हारे लिए पर्याप्त है?' बादशाह ने पूछा। 'हां, काफी है।' मजदूर ने कहा। 'कितना कमा लेते हो?' 'चार रुपए प्रतिदिन।' 'उन्हें खर्च कैसे करते हो?' मजदूर हंसकर बोला, 'बड़ी आसानी से खर्च करता हूं। सीधा हिसाब है। एक रुपया मैं खाता हूं, एक रुपया कर्ज देता हूं, एक रुपया कर्ज लौटाता हूं और एक रुपया फेंक देता हूं। ये सीधा हिसाब है।' बादशाह उलझ कर बोले, 'मेरी समझ में कुछ नहीं आया।' मजदूर हंस पड़ा। बोला, 'मैं पढ़ा–लिखा नहीं हूं भाई! बस पहेलियों में बात करने का शौक है, सो बात बना दी।' 'पहेली है, तो पहेली का जवाब बता दो।' बादशाह ने आग्रह किया। मजदूर ने स्पष्टीकरण किया, 'एक रुपया खाता हूं अर्थात अपने परिवार के भोजन के लिए खर्च करता हूं। एक रुपया कर्ज देता हूं अर्थात अपने बच्चों पर खर्च करता हूं, ताकि वृद्धावस्था में वो हमारा ख्याल रखें। एक रुपया कर्ज लौटाता हूं अर्थात अपने बूढ़े माता–पिता पर खर्च करता हूं, क्योंकि उन्होंने मेरा पालन–पोषण किया है। एक रुपया फेंक देता हूं, अर्थात दान कर देता हूं।' बादशाह मजदूर की प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुए और बोले, 'तुमने अभी जो मुझे बताया है वो और किसी को न बताना।' 'कोई पूछेगा तो अवश्य बताऊंगा।' मजदूर हंस कर बोला। 'इसमें छिपाने की क्या बात है! तुम कोई हमारे बादशाह हो कि तुमने आज्ञा दी और मैंने मानी।' 'हां, हम बादशाह ही हैं।' बादशाह ने अपना परिचय कराया, 'हम दरबार में ये पहेली पेश करेंगे और फिर देखेंगे कि कौन इस पहेली को सुलझाता है? थोड़ा आनंद लेंगें। लो, ये अशर्फियां रखो। तुम्हारा इनाम है।' मजदूर घबराकर खड़ा हो गया बोला, 'इनाम की जरूरत नहीं, मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।' 'ये अशर्फियां तुम्हारी अक्लमंदी का इनाम हैं। अब तुम हमसे वादा करो कि तुम जब तक सौ बार हमारा चेहरा नहीं देख लोगे, किसी को पहेली का हल नहीं बताओगे।' मजदूर ने इनाम लेकर वादा कर लिया। दूसरे रोज बादशाह ने दरबार में पहेली पेश की, 'एक मजदूर है। उसे प्रतिदिन चार रुपए मजदूरी मिलती है। इनमें एक रुपया वो खाता है, एक कर्ज देता है। एक रुपया कर्ज चुकाता है और एक रुपया फेंक देता है। बताओ कि वे चार रुपए कैसे और कहां खर्च करता है?' दरबार में मौन छा गया। बादशाह बहुत निराश हुए। कहा, 'इसका अर्थ ये हुआ कि हमारे दरबार में कोई बुद्धिमान व्यक्ति नहीं है। हम कल तक का समय देते हैं। हमें पहेली का हल चाहिए।'

एक मंत्री बहुत होशियार था। उसने बादशाह के सुरक्षा–कर्मियों से मिलकर पता लगाया कि बीते दिनों में बादशाह कहां–कहां गए थे। उसने न केवल मजदूर को तलाश कर लिया बल्कि पहेली का हल भी जान लिया। दूसरे दिन मंत्री ने दरबार में पहेली का हल पेश कर दिया। बादशाह के क्रोध की सीमा न रही। उन्होंने सिपाही भेजकर मजदूर को पकड़कर बुलवाया। पूछा, 'तुमने इन्हें पहेली का हल बताया है?' 'जी हां, बताया है।' मजदूर ने स्वीकार किया। 'हमने तुमसे वादा किया था कि किसी को पहेली का हल नहीं बताओगे। तुमने वादा क्यों तोड़ा?' बादशाह क्रोधित होकर बोले। 'मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। आपने कहा था न कि जब तक सौ बार आपका चेहरा न देख लूं, किसी को पहेली का उत्तर न बताऊं? तो मैंने सौ बार आपका चेहरा देखा और मंत्री जी को उत्तर बता दिया।' 'क्या कहते हो? तुमने हमारा चेहरा कहां देखा? उस दिन के बाद आज अभी तुम हमारे सामने आए हो।' मजदूर ने भयभीत हुए बिना

कहा, 'जहांपनाह, मैं आपको पूरी बात बताता हूं। आपके ये मंत्री मुझ तक पहुंचे। दस अशर्फियां मेरे सामने रखीं और पहेली का उत्तर मांगा, मैंने इंकार कर दिया।' 'फिर?' 'इन्होंने फिर दस अशर्फियां रखीं। मैंने इंकार कर दिया।' 'फिर??' 'मैंने पहेली का उत्तर बताने से इंकार कर दिया।' 'फिर...?' 'ये दस–दस अशर्फियां बढ़ाते गए। जब सौ अशर्फियां मेरे सामने आ गईं तो मैंने उत्तर बता दिया।' 'सौ अशर्फियां लेकर तुमने वादा तोड़ दिया।' बादशाह ने गुस्से से कहा, 'यही है तुम्हारा वादा?' 'नहीं, मैंने बेईमानी नहीं की। अशर्फियों पर आपका चेहरा है, सौ बार आपका चेहरा देखा और फिर उत्तर बताया। ये वादा तोड़ना तो नहीं हुआ जहांपनाह।' मजदूर ने कहा। बादशाह चकित रह गए। उन्होंने तो ये बात सोची ही नहीं थी। मजदूर ने अपनी बुद्धि के बल पर सौ अशर्फियां और कमा ली थीं। बादशाह ने मुक्त हृदय से मजदूर की प्रशंसा की तथा उसे अपने दरबार में रख लिया।

अमेरिका में दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जाएगी हिंदी

ताजा खबरः देश–दुनिया : हिंदुस्तान लाइव डॉट कॉम से साभार –

अगर सब कुछ तय वक्त पर हुआ तो बहुत जल्द हिंदी भाषा अमेरिकी स्कूलों में अपनी जगह बना लेगी। सबसे महत्वपूर्ण यह कि विद्यालयों में अंग्रेजी के बाद दूसरी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाई जाएगी। बाइडन प्रशासन को अमेरिकी स्कूलों में हिंदी पढ़ाने का प्रस्ताव मिला है। सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक पार्टी के संगठन एशिया सोसायटी (एएस) और इंडियन अमेरिकन इम्पैक्ट (आईएआई) से जुड़े 100 से अधिक जनप्रतिनिधियों ने राष्ट्रपति जो बाइडन को इस बारे में प्रस्ताव सौंपा है। प्रस्ताव में 816 करोड़ रुपए के फंड से एक हजार स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई शुरू करने की बात है। संभावना है कि बाइडन का भारत के प्रति सकारात्मक रुख और अगले साल राष्ट्रपति चुनाव के मद्देनजर इस प्रस्ताव को मंजूरी मिल जाएगी। अगले साल सितंबर से हिंदी भाषा की पढ़ाई शुरू हो सकती है। अमेरिका में रहने वाले करीब 45 लाख भारतवंशियों में से हिंदी सर्वाधिक नौ लाख से ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है।

इस प्रस्ताव में क्या-क्या

- सबसे पहले छात्रों को वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए तैयार करने में मदद मिलेगी। हिंदी दुनिया में चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।
- यह संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत के बीच सांस्कृतिक समझ और प्रशंसा को बढ़ावा देगा, क्योंकि दोनों देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।
- इससे हिंदी भाषा और संस्कृति को संरक्षित करने में मदद मिलेगी, जो वैश्वीकरण के बढ़ते खतरों का सामना कर रही है।
- अमेरिका में हाई स्कूल के स्तर पर हिंदी कोर्स संचालित किए जा रहे हैं, लेकिन इनकी पढाई बेसिक स्तर पर होती है। हाई स्कूल स्तर पर होने के कारण बच्चे इसे आसानी से सीख नहीं पाते हैं। ऐसे में प्राथमिक कक्षाओं से भी हिंदी की पढाई कराने से छात्रों को फायदा होगा।

इन देशों में पढ़ाई जाती है हिंदी

हिंदी भाषा को पहले से ही वैश्विक स्तर पर काफी पहचान मिली हुई है। वर्तमान में यह कई देशों में पढ़ाई जा रही है। इनमें मॉरिशस, फिजी, जापान, इटली, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, फिनलैंड समेत कई ऐसे देश शामिल हैं। हाल ही में ब्रिटेन ने भी इसी सत्र से 1500 स्कूलों में हिंदी भाषा की पढ़ाई शुरू करने का फैसला किया है।

मन पतंग

कहानी

डॉ. रंजना जायसवाल
लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश

जनवरी की सर्द सुबह गुड़ी–मुड़ी सी जिन्दगी पैर पसारने को बेकरार थी। तभी ठंडी हवा का झोंका अभय के तन और मन दोनों को सहला गया। सूरज भगवान उसके साथ आँख–मिचौली कर रहे थे। धूप को तलाश करती उसकी आँखें गेट से लॉन की ओर ठहर गई। उसका मन एक छोटे बच्चे की तरह किलक गया। बचपन में वह भी माँ के साथ इसी तरह जब लुका–छिपी का खेल खेलता तब माँ उसे हर बार जिताने के लिए पकड़े जाने का बहाना करती। ''ढूंढ लिया मैंने''। और माँ कितनी मासूमियत से कहती.....''ओह! मैं फिर हार गई, बिट्टू फिर जीत गया''। उसके चेहरे पर एक सहज मुस्कान आ गई, माँ ऐसी ही होती है। उसकी पत्नी नीतू भी तो उसके बेटे से हमेशा हार जाती है। माँ सबके बारे में सोचती है पर माँ के लिए कभी कोई नहीं सोचता। उसने ठंड से ऐंठती अपनी उंगलियों को तेजी से रगड़ा और गर्म करने की कोशिश की पर उसने कुर्सी उठाई और धूप के लालच में वहीं लॉन में बैठ गया। नर्म, मुलायम, अलसाई सी घास ठंड में मानो ठिठुर के दुबक गई थी। माँ का अपना ही लॉजिक था, जब तुझे ठंड लगती हैं मुझे ठंड लगती है तो इन पेड़–पौधों को भी तो लगती है। तभी तो इनकी ग्रोथ जाड़े में कम होती है। पता नहीं इस बात में कितनी सच्चाई थी, पर माँ के इस दुनिया से जाने के बाद उसकी हर बात पर भरोसा करने का मन करता था। कितने शौक से लगाई थी माँ ने यह घास दिल्ली सिलेक्शन से, माँ ने न जाने कहाँ–कहाँ से पता लगाया था। दिन भर अपनी देख–रेख में माली के साथ घास लगवाई थी। कितनी बार माँ से कहा था, माँ! वो कर लेंगे, आप आराम से अंदर बैठो। पर माँ तो माँ ही थी। सच भी था माँ के हाथ लगाते ही सारी चीजें खिल जाती, जान आ जाती थी। तू फिर चप्पल लेकर घास पर चढ़ गया। ऊपर से यह कुर्सी भी, अभी कुर्सी के पाएं से गड्ढे बन जाएंगे। लगता बस अभी माँ आएँगी और उसे डॉट लगाएंगी। मन न जाने क्यों भारी हो गया, इस साल ठंड जाने का नाम ही नहीं ले रही थी कुछ भी करने का मन नहीं कर रहा था। आज अभय को माँ बहुत याद आ रही थी। माँ होती तो अभी कहती, तुझे ठंड लग रही है ना चल अंदर कमरे में बैठ जा मैं हीटर चला देती हूँ, आराम मिल जाएगा और वह दुलार से उनके कंधे पर सिर झुका लेता।

माँ बोरसी जला दो न ठंड से राहत भी मिल जाएगी और कमरा भी गर्म हो जाएगा। इसी बहाने भुजे हुए आलू और मटर भी खाने को मिल जाएंगे। और माँ हँस कर कहती, इतना बड़ा हो गया पर बचपना बिल्कुल नहीं गया और माँ झूठी नाराजगी दिखाते हुए बोरसी जलाने बैठ जाती और उसी के लाल दहकते अंगारों में छोटे–छोटे आलू और मटर भी डाल देती। वह माँ से नजर चुरा धीरे से कागज का टुकड़ा डाल देता। आग अचानक से भभक जाती और कमरा धुंए से भर जाता। क्या डाल दिया रे तूने? माँ पूछती और वह मासूम सा चेहरा बनाकर बैठ जाता। कुछ भी तो नहीं देख लो, मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है। माँ आलू पलटने के लिए चिमटा लेने रसोईघर चली जाती और वह अपने होठों को गोल कर हल्के–हल्के फूँक मारकर खिलवाड़ करने लगता। वह सोच रहा था इंसान और जिन्दगी को उसने कोयले की तरह सांस लेते और रंग बदलते देखा है। हर फूँक के साथ कोयला, कभी काला, कभी लाल तो कभी सफेद हो जाता। उसने गहरी सांस ली। सामने नीम के पेड़ पर एक तोता बैठा अपने पंखों को अपनी चोंच से खुजला रहा था। अचानक उसे अपनी माँ की याद आ गई, वह हमेशा कहती थी जैसे राक्षस की जान तोते में होती है वैसे मेरी जान भी बिट्टू में है और वो इस बात पर खिल–खिलाकर हँस पड़ता था। छत के ऊपर लगे बोगनवेलिया की सूखी टहनियों की बीच से झांकता हुआ एक तारा आसमान में अभी–अभी भी टिमटिमा रहा था, शायद रास्ता भटक गया था। माँ हमेशा कहती थी, मरने के बाद इंसान तारा बन जाता है। सामने के कमरे में माँ की तस्वीर के ऊपर चंदन की माला चढ़ी हुई थी। एक पल को उसे लगा कि मानो उन सूखी डालियों के फ्रेम में आसमान से झाँकती माँ हो, जो तारा बनकर उसे निहार रही हो। अपने हिस्से का प्रेम समेट माँ आसमान में टिमटिमा रही थी। कभी–कभी सबके होने के बावजूद किसी एक इंसान के न होने की कमी जिंदगी भर सालती है।

माँ की उंगलियों में कितना रस था, सिर्फ वह ही नहीं मुहल्ले के सारे लोग भी उनकी काबिलियत से वाकिफ थे। जाड़े की हाड़ कंपा देने वाली ठंड में वह वही गेट खोल चारपाई डालकर बैठ जाती। धीरे–धीरे अड़ोस–पड़ोस की चाची

और ताई जी लोगों का जमावड़ा लगना शुरू हो जाता। बहुरिया! जीजी से नींबू का अचार बनाना सीख ले, उनके जैसा अचार पूरे मुहल्ले में कोई नहीं डालता। सालों साल खराब नहीं होता, बराबर नमक मिर्च मुँह में डालो तो झट से घुल जाए और घंटों मुँह में स्वाद बना रहे और मां झट से अपनी पाक कला का नमूना दिखाने के लिए नई बहू के सामने नींबू का अचार रख देती थी। नमूने के तौर पर कटोरी भर लाया गया नींबू का अचार एक हाथ से दूसरे हाथ होते हुए कब चट हो जाता पता भी नहीं चलता। बिटिया जब तुम्हारे पैर भारी होंगे तो तुम्हारे लिए नींबू का अचार मैं ही बनाऊँगी। मां कितने उत्साह से कहती थी, मां के हाथ की बुनाई के आगे तो बाजार का स्वेटर भी फेल था। चार फंदे सीधे और चार फंदे उल्टे कर न जाने वह कितनी स्वेटर, मोजे, टोपी, कार्डिगन बुन जाती थी। राह चलते जिस डिजाइन को देख ले,उसे आँखों और दिमाग में एक्स रे की तरह उतार लेती और दूसरे दिन उनकी उंगलियों से होता हुआ ऊन का गोला उनकी कलाकारी में तब्दील हो जाता। एक अजीब सी गर्माहट थी उनकी बुनाई में शायद उनके प्यार और मोहब्बत की ऊष्मा के आगे वह स्वेटर भी घुटने टेक देता था।

एक साल हो गया था माँ को इस दुनिया से गए। माँ के बिना जिंदगी बस गुजर और बीत रही थी पर जीना अभी शुरू नही हो पाई थी।पिछले साल मौनी अमावस्या के दिन माँ की तेरहवीं थी, न बोलकर भी दिन भर अपने होने के आभास देने वाली माँ फोटो फ्रेम में हमेशा के लिए मौन हो गई थी। तभी वह काटा। आसमान रंग–बिरंगी पतंगों से लबालब भरा था। शायद किसी ने किसी की पतंग काट दी थी। माँ के जीवन की पतंग भी तो क्रूर काल ने काट दी थी। उसकी आँखें छलछला आई। माँ के जाने के बाद जीवन मानो रुक सा गया था, अचानक उसे याद आया, आज तो मकर संक्रान्ति है। संक्रान्ति के त्योहार के दस दिन पहले से ही माँ की तैयारियॉ शुरू हो जाती थी। माँ हर साल चौदह लोगों को दान करती थी। आँगन में चावल, उरद, दान का सामान और पैसे रख दिए है तुम सब नहाने के बाद छू देना गरीबों को दान देने में चला जाएगा और माँ हर बार दान के महत्व को लेकर कहानी सुनाने बैठ जाती। दस दिन पहले से ही काले तिल को धोना सुखाना और पछोरना शुरू हो जाता। नए गुड़ की सोंधी खुशबू से घर भर जाता। कितना सधा हुआ हाथ था अम्मा का, न किसी तराजू की जरूरत न चम्मच की। गुलाब जामुन की चाशनी हो या लाई पट्टी के गुड़ की चाशनी उनकी झुर्रिदार उंगलियाँ और चश्मे के पीछे से झाँकती बूढ़ी आँखें दोनों उंगलियों के बीच की सीमा रेखा में भी तार गिन ही लेती। नीतू गैस नीचे उतार दे, हमसे खड़े होकर काम नहीं होता। नीतू चुपचाप माँ के आदेश का पालन करती। माँ गैस के चारों ओर अखबार बिछा देती और अपनी पुरानी सूती धोती या गमछा को चौपतिया कर दस्ती बना लेती। गर्म कड़ाही में बाएँ हाथ से छोटी–छोटी मुट्ठी भर रामदाने के दाने डाल कपड़े के उस दस्ती से तेजी से उसे गोल–गोल घुमाती और रामदाने के दाने कढ़ाही के ताप से छटपटा कर इधर–उधर भागने लगते।

माँ उन्हें फिर से दस्ती के जर्द में खींच लेती और देखते ही देखते कढ़ाही फुले हुए दानों से भर जाती। माँ को कितना शौक था हर चीज बनाने का पर मजाल है त्योहार में चढ़ाए और दान किए बिना वह एक दाना मुँह डाल लें। तिल पट्टी, मूंगफली की पट्टी, रामदाने के लड्डू वह झटपट बनाकर रख देती। नीतू सामान पकड़ाने में उनकी मदद तो करती पर बनवाने के नाम पर हाथ खड़ा कर देती कितनी बार माँ ने नीतू से कहा होगा, कितनी बार कहा सीख ले, दिन भर मोबाइल से नई – नई चीजें बनाती है पर ये नहीं कि जो सास बनाती है जो उसके पति को पसन्द है सीख ले। देख लेना मेरे मरने के बाद तुझे बहुत खलेगा, बहुत याद आएगी तुझे, पर नीतू की भी पता नहीं क्या जिद्द थी। आप है न यह सब बनाने के लिए फिर मैं क्यों बनाऊँ सब मिलता है बाजार में, नीतू ढीठता से जवाब देती पर माँ के हाथ का स्वाद कहाँ से लाएगी? माँ तपाक से बोलती, माँ की बात सुन नीतू मंद–मंद मुस्कुराती रहती, एक बार उसने भी तो नीतू से कहा था, माँ चाहती है कि तुम सीख लो, उनकी छोड़ो कम से कम अपने पति की पसन्द के बारे में तो सोचो कल अगर माँ........शब्द गले में अटक गए, कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जिनके बारे में गलत कहना तो क्या सोचने में जुबान और मन दोनों लड़खड़ा जाते हैं। मेरा चेहरा उतर गया। नीतू मेरे पास खिसक आईं। आप भी न क्या–क्या सोचते हैं। माँ अगर चाहती है तो तुम क्यों नहीं सीख लेती हो,आखिर कभी यू ट्यूब से, कभी अपनी बहन और दोस्तों से आए दिन कुछ न कुछ बनाना सीखती ही हो। ऐसी भी क्या जिद्द? अभय का मन न जानें क्यों खिन्न हो गया था। नीतू अचानक से गंभीर हो गई। आपको क्या लगता है कि मैं यह सब जानबूझ कर करती हूँ। तुम जानो या तुम्हारा भगवान। अभय की जुबान पर अचानक से कांटे उग आए थे। नीतू की आँखें पनिया गई। पापा जी के जाने के बाद माँ बिल्कुल अकेली पड़ गई थी। आप तो ऑफिस चले जाते थे पर मैंने उन्हें अकेलेपन से जूझते रोते देखा था।

माँ खाना सिर्फ बनाने के लिए नहीं बनाती थी बल्कि यह उनका शौक भी था पर न जानें क्यों उससे भी उन्होंने मुँह मोड़ लिया था। आखिर कब तक उन्हें इस हाल में देख सकती थी। इसीलिए कभी आपके नाम तो कभी गोलू की पसन्द के नाम पर उनसे खाना बनवाने लगी। पापा जी की कमी को हम पूरा तो नहीं कर सकते पर उनके दुःख को कम करने की कोशिश तो कर ही सकते हैं। अभय चुपचाप उसकी बात सुनता रहा, उसने एक गहरी सांस ली। दर्द उसके चेहरे पर पांव पसारे पड़ा था। इसके बाद भी अगर मैं आपको गलत लगती हूँ तो मैं अपना अपराध स्वीकार करती हूँ। मैं सोच रहा था एक बहू अपने ससुराल में मायके की अपेक्षा ज्यादा समय बिताती है पर जब विश्वास की बात आती है तब लोग बहू की अपेक्षा बेटी पर विश्वास करना उचित समझते हैं, आखिर उसने भी तो यही गलती की थी। उस दिन से उसने भी नीतू का साथ देना शुरू कर दिया था। माँ तुम्हारे हाथ में जो बात है वह नीतू के हाथ में कहां तुम्हारी तो उंगलियों में रस है। खाने में घुमा दो तो स्वाद आ जाता है। वह उसकी चिकनी–चुपड़ी बातों से खिलखिला कर हँस पड़ती, उसने यही तो चाहा था। आज वह अतीत की गलियारों में टहल रहा था तभी पीछे से गोलू ने उसकी गर्दन में अपने दोनों छोटे–छोटे हाथ डाल दिए और वो चौक गया। क्या हो रहा है गोलू? कुछ नहीं पापा। गोलू ने उदास स्वर में कहा, आज तो तुम्हारी छुट्टी है न मजे ही मजे हैं तुम्हारे। कैसे मजे पापा। मेरे सारे दोस्तों के पास इतनी सारी काईटस है और मेरे पास एक भी नहीं दादी होती तो मुझे कितनी सारी काइट्स दिलाती पर इस बार एक भी काईट नहीं आई। अभय चुपचाप सुनता रहा,गलत तो नहीं कह रहा था गोलू वह बदस्तूर जारी रहा। दादी थी तब सब कितना मजा करते थे। पूजा होती थी, पतंग उड़ाते थे खिचड़ी बनती थी पर आज कुछ भी नहीं। इससे अच्छा तो था कि मैं स्कूल ही चला गया होता। गोलू ने चुपचाप उसका मोबाइल फोन उठाया और अपने कमरे में गेम्स खेलने चला गया। उसके पास गोलू की किसी भी बात का कोई जवाब नही था। तभी उसने अपने कंधे पर एक चिर–परिचित दबाव महसूस किया। नीतू उसके पास आकर बैठ गई, उसने आसमान में उड़ती पतंगों को देखा। वह तारा है न.....उसने हुलस कर पूछा, हम्म! मैंने सामने कमरे में लगी फोटो की ओर देखकर कहा, माँ की याद आ रही है न? मेरी आँखें सजल हो गई, नीतू मेरे हाथों को अपने हाथों में लेकर सहलाने लगी, माँ की कमी कोई भी पूरी नहीं कर सकता पर अगर आज माँ होती तो हमें इस तरह उदास देखकर कितना दुखी होती। जिंदगी चलने का नाम है, माँ हमारे बीच आज नहीं है पर उनकी यादें हमेशा हमारे साथ हैं। मैं नीतू के चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रहा, अचानक जिम्मेदारियों ने उसे कितना बड़ा बना दिया था।

अब जल्दी से उठिए, पूजा भी तो करनी है। माँ को गए एक साल हो गया है उनके जाने के बाद ये पहला त्योहार है। करना तो है ही.. अभय की आँखों में हजारों सवाल तैर गए, नीतू उसे उन सवालों के साथ छोड़ आगे बढ़ गई। अभय भरे मन से नहा–धोकर तैयार हो गया। आँगन में पूजा और दान का सामान रखा है छू दीजिएगा। गरीबो को दान कर आऊँगी। आँगन में वैसे ही चावल, उरद की दाल, पैसा और चौदह रूमाल रखे हुए थे, ठीक वैसे ही जैसे माँ रखा करती थी। नीतू ने भी वह सारी चीजें बनाई थी जो माँ बनाया करती थी। अभय आश्चर्य से नीतू को देख रहा था, उसे ये सब कैसे आता है। नीतू तुमने ये सब कब सीखा? नीतू ने मुस्कुराते हुए कहा, मैंने माँ की कभी मदद नहीं की पर उस किचन में मैं भी तो रहती थी और उन्हें काम करते देखती थी। माँ को इस तरीके से घर में चुपचाप बैठे नहीं देख सकती थी। इसलिए जब वह कोई चीज बना रही होती तो वह उन्हें करने देती। वह खुश होती थी अपने बच्चों के लिए बनाकर क्योंकि माँ के हाथ के स्वाद के आगे सारे स्वाद फीके हैं।

माँ तस्वीर में मुस्कुरा रही थी, अभय ने गोलू को आवाज दी। कहाँ हो गोलू पतंग नहीं उड़ानी है क्या? आज उस निक्कू और उसके भाई की पतंग जरूर काटेंगे। पिछले दो साल से उसने तुम्हारी पतंग काटी है आज सारे बदले लिए जाएंगे। अभय ने गोलू को आवाज लगाई, नन्हा गोलू अभय की आवाज को सुनकर खिल उठा, पर पापा पतंग तो है ही नहीं पिछले साल की पड़ी हुई है। पता नहीं वह उड़ने लायक है भी कि नहीं हो सकता है रखे–रखे फट भी गई हो? तब तक हाथ में कटोरी लिए नीतू ने कमरे में प्रवेश किया। तू पतंग तो लेकर आ मैं लेई बना कर लाई हूँ, सब जोड़ लेंगे। सच्ची माँ! नीतू की बात सुनकर गोलू खुशी से नाचने लगा। अभय नीतू और गोलू को लेई से पतंगों को जोड़ते हुए देख रहा था। माँ भी तो इसी तरह से लेई बनाकर उसकी पतंग को जोड़ती थी। पता नहीं यह सच था या भ्रम, अभय ने तस्वीर में माँ की आँखों में एक खुशी देखी थी। नीतू को पतंग के साथ–साथ रिश्तों को जोड़ना भी बखूबी आता था।

स्वस्थ रहने के लिए करें नियमित रूप से इन पांच योगासनों का अभ्यास

(अमर उजाला डॉट कॉम से साभार संकलित)

स्वास्थ्य परिचर्या

स्वस्थ रहने के लिए नियमित रूप से योगाभ्यास करने की सलाह दी जाती है। लेकिन ऐसे कौन से योगासन है जिन्हें रोज आसानी से किया जा सके, जिससे शरीर में स्फूर्ति बनी रहे और शरीर की सारी क्रियाएं सुचारू रूप से चलती रहें। तो आइए जाने उन पांच योगासनों के बारे में जिनका अभ्यास रोजाना तीस मिनट करने से शरीर को लाभ मिलता है।

बालासन

यह आसन नियमित रूप से करने से कंधों और कमर के दर्द से निजात दिलाता है। बालासन की क्रिया रोजाना करने से सांस की समस्या से तो निजात मिलती ही है साथ ही पाचन क्रिया भी सही रहती है।

सुखासन

मानसिक शांति और थकान दूर करने के लिए नियमित रूप से कम से कम पांच मिनट तक सुखासन का अभ्यास करना चाहिए। इस आसन को करने से रीढ़ की हड्डी को मजबूती मिलती है।

अधोमुख सर्वासन

रोजाना कम से कम तीन से चार मिनट इस आसन का अभ्यास करने से हाथ, पैर, कंधा और सीने की मांसपेशियों को मजबूती मिलती है। अधोमुख सर्वासन का अभ्यास करने से फेफड़े मजबूत होते हैं।

ताड़ासन

ताड़ासन को करने से पैरों में मजबूती आती है। इस मुद्रा में कम से कम 12 सेकेंड तक रहते हुए रोजाना कम से कम दस बार इस आसन का अभ्यास करना चाहिए।

त्रिकोणासन

कमर और जांघों के पास का मोटापा कम करने के लिए ये एक बढ़िया आसन है। त्रिकोणासन करने से पाचन की समस्या दूर होती है। रोजाना कम से कम दो से तीन मिनट तक इस आसन का अभ्यास करना चाहिए।

कमर और गर्दन के दर्द से हैं परेशान तो नियमित रूप से करें इस योग का अभ्यास

आजकल सारा काम कम्प्यूटर के माध्यम से हो गया है जिसकी वजह से दिनभर दफ्तर में बैठकर काम करना होता है। जिसका नतीजा होता है कि बहुत से लोगों को कमर और गर्दन में तकलीफ होने लगती है। कभी–कभी यह दर्द इतना बढ़ जाता है कि इसके इलाज की जरूरत पड़ जाती है। लेकिन अगर नियमित रूप से योगाभ्यास किया जाए तो इस तरह की परेशानी से आराम मिल जाएगा। कमर और गर्दन में हो रहे दर्द से निजात पाने के लिए शलभासन की क्रिया बहुत असरदार है। तो आइए जानते हैं शलभासन करने की प्रक्रिया क्या होगी।

शलभासन करने की विधि

शलभासन करने के लिये जमीन पर चटाई बिछाकर उस पर पेट के बल लेट जाएं। फिर दोनों पैरों को सीधा रखें और हाथों को कमर के पास व सीधा रखें। हथेली ऊपर की ओर रखें। अब गहरी सांस लेते हुए अपने दांये पैर को ऊपर दीवार की ओर उठाएं। इस दौरान घुटनों को मोड़े नहीं और सांस लेते रहें। अब दांये पैर को नीचे रखें। इसी प्रक्रिया को अपने बांये पैर के साथ दोहराएं। इस प्रकिया को करते समय हाथों को स्थिर रखें। अब सांस लेते हुए अपने दोनों पैरों को ऊपर की ओर उठाएं। घुटनों को मोड़े नहीं। हाथों को कमर के बराबर में सीधा रखें और सांस लेते रहें। अब सिर को ऊपर की ओर उठाएं। पैरों को नीचे ले आएं और आराम की अवस्था में आ जाएं। इस आसन का अभ्यास दो से चार मिनट के लिये करें।

शलभासन करने के लाभ

शलभासन को नियमित रूप से करने से शरीर का लचीलापन बढ़ता है। जिससे आपको हर स्थिति में काम करने की क्षमता बढ़ती है। इसके साथ ही कमर की मांसपेशियों को मजबूती मिलती है और कमर के दर्द से आराम मिलता है। योग की यह क्रिया गर्दन, कंधा और हाथों की नसों को आराम दिलाती है।

राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023–24 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं	कार्य विवरण	क्षेत्र	पत्राचार का अपेक्षित प्रतिशत	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	**'क' क्षेत्र**	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100% 100% 65% 100%
		'ख' क्षेत्र	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90% 90% 55% 90%
		'ग' क्षेत्र	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र का 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55% 55% 55% 55%

अन्य मदें

क्र.सं	अन्य मदें	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/ की–बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय ।	50%	50%	50%

10.	कम्प्यूटर सहित सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13(i)	मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./ निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालय का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(ii)	मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(iii)	विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों / उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02 बैठकें वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही 01 बैठक) वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो ।	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।		

राज्यों का वर्गीकरण–क्षेत्रवार

हिंदी बोले और लिखे जाने की प्रधानता के आधार पर देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को नीचे दिए अनुसार तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है–

क–क्षेत्र	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली, उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़
ख–क्षेत्र	गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र, दादरा एवं नगर हवेली, दमन दीव
ग–क्षेत्र	आंध्र प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, असम, तमिलनाडु, मणिपुर, मिजोरम, गोवा, कर्नाटक, जम्मू–कश्मीर, केरल, नागालैंड, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, लक्षद्वीप, पांडिचेरी

कविता

अकेलापन

डॉ. नवनीत किरन (सी.एम.ओ. प्रभारी)
कोटेश्वर एचईपी, कोटेश्वर

मैं खड़ी अकेली ताक रही,
अपनी हदों को,

मन पंछी उड़ रहा, गगन छूने को,
बेबस कदम ठिठक रहे, आगे बढ़ने को।

मैं खड़ी अकेली ताक रही,
अपनी हदों को,

न कोई आहट, ना कोई खटखटाहट,
ढल रही सांझ, सूरज डूबोने को।

मैं खड़ी अकेली ताक रही,
अपनी हदों को,

गुजरे जमाने की बस, यादें बची संजोने को,
टूटी मुंडेर झाड़ रही, मेरे कोने.कोने को।

मैं खड़ी अकेली ताक रही,
अपनी हदों को,

सिमटी शानो शौकत, छेड़ रही झरोखों को,
न कोई दासी, न कोई संतरी,
रहा न कोई बुलाने को।

मैं खड़ी अकेली ताक रही,
अपनी हदों को,

बुर्ज हो या जिंदगी,
बहार लगेंगे रोज मेले,
अंतर्मन सभी अकेले,
खुद ही बुहारनी होंगी सबको,
अपने दिल की दल्लानों को।

बेटियाँ

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव ''कोमल''
व्याख्याता हिन्दी, रावगंज, कालपी, जालौन

हँसी है खुशी है और त्योहार बेटियाँ।
ईश्वर का है अनुपम उपहार बेटियाँ।
रौनकें हैं बेटियों से सोच लीजिए।
माता और पिता का हैं प्यार बेटियाँ।
कहती नहीं हैं कुछ भी, मांगती नहीं।
होती हैं गमखोर बेशुमार बेटियाँ।
खिलखिलाती मुस्कराती चहकती फिरें।
यूं लगें ज्यों कर रहीं उपकार बेटियाँ।
त्याग तप करती समर्पण कर्मशीला हैं।
फूल हैं कोमल कली सुकुमार बेटियाँ।
मान हैं सम्मान हैं परिवार की गरिमा।
नेह का सचमुच लगें संसार बेटियाँ।
दो कुलों के जोड़ने का सेतु बनती हैं।
शुभ प्रतीकों से भरें घर द्वार बेटियाँ।
बेटियाँ तो शुभ सृजन संसार रचती हैं।
और शिशुओं में भरें संस्कार बेटियाँ।
बेटियाँ हैं जिन घरों में वह सुपावन है।
बे अभागे हैं जिन्हें हैं भार बेटियाँ।

मेरे प्यारे दिनकर

डॉ. कमलेन्द्र कुमार
शिक्षक, कैरियर आलेख, बाल साहित्य

रोज सवेरे खिड़की से, धूप सुनहरी आती है।
आकर मेरे हर कमरे में, उजियारा कर जाती है।।

रवि प्रकाश तुम ऐसे ही, हरदम आते रहना।
मन मंदिर में फैले तम को, हरदम हरते रहना।।

मेरे पथ को दिशा दिखाना, मेरे प्यारे दिनकर।
रात दिन मैं याद करूंगा, तुमको माना गुरूवर।।

क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात कहने के बजाए दूसरों के हृदय को ज्यादा दुखाता है *–मुंशी प्रेमचंद*

स्वाधीनता के 75 वर्ष

कविता

सिद्धार्थ कौशिक
प्रबंधक (ओएंडएम), कोटेश्वर

वर्ष अर्ध शत बीसवे पड़ाव के,
हस्ती सुप्तावस्था में मय घाव के,
श्वान अगणित स्वामी बन–बन झूमते,
गर्व से उसे बांध रज्जु से घूमते,
लोक दिव्य का स्वामी कहलाता कभी,
घाव अंग भंग स्राव सहलाता अभी,
रक्त धारा अपरिमेय अश्रु धारा,
म्लेच्छों का उत्पात हस्ती बेसहारा,
दिव्य था वो रक्त उसका पी लिया,
जिजीविषा ही के सहारे वो जी लिया,
कर संपीड़ित ज्ञान कब तक,
बांध रखते श्वान कब तक,
नेत्र खोले निद्रा तोड़ी छोड़ी उसने मूढ़ता,
धर ली अपने शीश वीरता शूरता,
जाग उठे दिक्पाल दिग्गज सुन चिक्कार,
दी गरज कर अपने कण–कण को पुकार,
कण–प्रति हस्ती का जागा,
श्वान पुच्छल दाब भागा,
था चला जो श्वान हस्ती हाँकने,
अब लगा था घर को अपने भागने,
जाते–जाते किंतु घात वो कर गया,
वाम–दक्षिण रक्त से वो भर गया,
लड़खड़ाता डगमगाता,
एक शिशु सम था कभी वो कप–कंपाता,
यकता ने होना खुद को औसत जानकर,
सृजन शक्ति को तर्क ही में सानकर,
सदियों से देखा राम का तम्बू में रहना,
बहुसंखी सीखा जीना घुट के दब के रहना,
बीता समय, जगने लगी थी चेतना,
हस्ती लगा अब सीखने था जीतना,
विज्ञान तंतु थाम रच धागे लिए,
सो गए थे स्वप्न सच सारे किए,
आत्मनिर्भर अणुओं में हस्ती हुआ,
शस्त्रों अस्त्रों ने आसमानों को छुआ,
स्वर्णिम चतुर्भुज कल्पना पर पथ बने,
विकास मग में चलने को फिर रथ तने,
स्वच्छता को उसने अपने शीश धर,
वंचितों के लाखों खाते खोलकर,
आधार जन धन दूरभाष को जोड़कर,
शत्रु बाहें तोड़कर,
दंती गरजा और लगा फिर दौड़ने,
लगा हौंसलों से अपने वो,
तूफानों का रुख मोड़ने,
अर्सों रही जो आतताइयों से भरी,
कल्हण की राज तरंगें उसमें चल पड़ी,
लाल राम जो सदियों से थे घर से हीन,
अतिशीघ्र होंगे भव्य पालन पर आसीन,
सम्वत् पिछत्तर हो गए स्वाधीनता के,
गाने छोड़े व्याल ने स्वर दीनता के,
संसार विचरण करता दंती है अशंक,
प्रति दिशा विकास का ही बजता शंख,
है महान प्रयाण चलना है सतत,
सीखा उसने पंगु दौड़ में दौड़ना,
रास आया न उसको सीमा तोड़ना,
एक अंधी दौड़ ही में दौड़ना,
पीना विष, अमृत का प्याला तोड़ना,
लगा मूढ़ता में त्याग शक्ति सोचने,
आ नहीं सकता मुझे कोई नोचने,
शत्रु बैठा था गिध सम इसी ताक में,
आया घुस वह शीश मुख्य भाग में,
मान हर कर भूमि लेकर शत्रु भागा,
फिर भी अपनी मूढ़ता से वो न जागा,
फिर किया उस भाई ने घातक प्रहार,
हस्ती ने जिसको दिया सोने का हार,
इस बार हस्ती ने थामा विक्रम,
बोली तोपें घूमे चक्रम,
हस्ती अब आतंक में था फँस गया,
कश्मीर ए कश्यप दानवों में धँस गया,
लाखों बच्चे औरतें वृद्ध और जवान,
खो गया उनके घरों का हर निशान,

थाम प्रकृति का हाथ पर्दे में विगत,
विश्वगुरु संज्ञा को वापिस धारणा,
ज्ञान खड्ग अज्ञान तम को मारना,
तुम ही एक हो जो भागीरथ बन सके,
कल्याण विश्व के हेत मेरु तन सके,
जाना वैभव मध्य में समभाव धरना,
बस में तुम्हारे कर्म सब बिन हेत करना,
हो तुम्हीं संसार आशा,
जानो तुम मानवता भाषा,
झांको अपने भीतर और पर खोल दो,
उड़के पहुँचो मेरु तक और बोल दो,
जागो हे संसार तुम अब मूढ़ता से,
जानो वस्तु ज्ञान सब तुम गूढ़ता से,
प्रेम धारा शक्ति कूलों मध्य बहती,
पीड़ा शक्तिहीन प्रजा ही सदा है सहती,
शक्तिहीनता त्याग शक्ति का अंगीकार,
ईशप्रियता को ऐरावत कर स्वीकार,
दिखलाओ मार्ग प्रकाश काटो अंधकार,
अब समय है तुम्हारा भर लो तुम हुंकार।

जंगल की व्यथा

कविता

मनोज राय
प्रबंधक, अभिलेख कार्यालय, टिहरी

सुन मानव जंगल तो मैं हूं, तुम जंगली क्यों बन जाते हो,
फरवरी मार्च आते ही, तुम मुझे फिर क्यों जलाते हो।
सोचा है कभी कैसा लगता है मुझे, जब मेरे सामने मेरी कोपलें,
मेरे पेड़ मेरा जंगल जलाते हो, अरे जंगल तो मैं हूं तुम जंगली क्यों बन जाते हो।
मुझ बेजुबान निरीह से बेचारे को जलाते हो रुलाते हो ,
पर क्या करूं मजबूर हूं सोचता हूं, जंगल तो मैं हूं तुम जंगली क्यों बन जाते हो।
सोच मानव अगर ये आग तेरे घर तक पहुंच जाए,
और इसी आग से तेरा आशियाना जल जाए।
तो कितना रोयेगा, तू चीखेगा, तू अपनी भावनाओं को, सवेदनाओं को, उकेरेगा तू,
पर मैं क्या करूं मैं तो न रो सकता हूं ना चीख सकता हूं,
अपनी भावनाओं को न संवेदना को उकेर सकता हूं।
मेरे कष्ट को समझ जब जलाते हो, मेरे सामने मेरे परिवार सारे पेड़ को जलाते हो,
सोचता हूं मैं जंगल तो मैं हूं, तुम जंगली क्यों बन जाते हो।
अभी भी समझ ले मानव, ईश्वर ने तुझे इंसान बनाया है, और मुझे जंगल,
पर तू जंगली क्यों बन रहा है, अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए क्या कर रहे हो।
ना पानी, न शुद्ध हवा, न जंगल, कुछ भी नहीं छोड़ रहे हो, सारा दोहन खुद ही कर रहे हो ,
संभल जा तू मानव मुझे जंगल ही रहने दो और मुझे जलाना छोड़ दो ।
पेड़ लगा अपने भविष्य की पीढ़ी के लिए, तभी तो जिन्दा रहेगी मानव सभ्यता ,
विकसित होगा तेरा समाज, इतना समझाता हूं, पर नहीं समझते हो,
जंगल तो मैं हूं तुम जंगली क्यों बन जाते हो।

मां–बाप की आशीषें

कविता

सुरेश कुमार
उप अभियंता (तकनीकी), ऋषिकेश

सारी जिंदगी घूम ली जन्म की तलाश में,
तलाश तुरंत खत्म हो जाती,
अगर दो पल बैठ जाता, तू अपने मां–बाप के पास में।
वजूद नहीं मेरा अकेले अपने आपका,
मैं कितना भी बड़ा बन जाऊं, शुक्र–गुजार हूं मैं अपने मॉ–बाप का।
सारी जिंदगी घूम ली जन्म की तलाश में,
चलना सिखाया जिन्होंने सहारे दिए,
आज वो बच्चे ही अपने मां–बाप से पूछते हैं,
आखिर किया ही क्या है तुमने हमारे लिए।
कोई फायदा नहीं चार–धाम, पूजा–पाठ और जाप से,
अगर तुम प्यार नहीं कर सकते अपने मां–बाप से,
सारी जिंदगी घूम ली जन्म की तलाश में,
विचित्र विडम्बना है कि मां–बाप की जिंदगी गुजर जाती है बेटे की लाइफ बनाने में,
और बेटा स्टेट्स लिखता है, माई वाइफ इस माई लाईफ।
बूढ़े मां–बाप की आंखे घर का वैभव देखकर खुश ही होती हैं,
परिवार की एकता देखकर खुश होती हैं,
चाहे लाख कर लो तुम पूजा और तीर्थ करो हजार,
अगर मां–बाप को ठुकराया तो सब कुछ है बेकार,
सब कुछ मिल जाता है मगर, याद रखना कि बस मां–बाप नहीं मिलते,
मुरझा के जो गिर जाए एक बार डाली से, ऐसे फूल है जो दोबारा नहीं खिलते,
मां–बाप के पास बैठने के दो फायदे हैं,
पहला आप कभी बड़े नहीं होते, और दूसरा मां–बाप कभी बूढ़े नहीं होते,
मां–बाप के हाथ पकड़ कर रखिए यकिन मानिए,
लोगों के पांव पकड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी,
करो दिल से सजदा तो इबादत बनेगी।
खुलेगा जब तुम्हारे गुनाहों का खाता, तो मां–बाप की सेवा जमानत बनेगी,
मॉ–बाप की सेवा अमानत बनेगी, चाहे जितना भी आजमा लो दुनिया को,
मां–बाप के सिवा सारी दुनिया कोरी है,
चाहे जितना भी संगीत सुन लो, सबसे सुरीली मां की लोरी है,
प्रभु परमात्मा से जिंदगी में इतना जरूर मांग लेना,
कि मां–बाप के बिना कोई घर न हो, और कोई मां–बाप बेघर न हो,
बंद किस्मत के लिए कोई चाबी नहीं होती, सूखी उम्मीदों की कोई डाली नहीं होती,
जो झुक जाए मां–बाप के चरणों में, उसकी झोली कभी खाली नहीं होती।

तुम्हारा साथ चलना

कविता

श्रीमती सीमा बिज्लवान
पत्नी श्री जे.पी.बिज्लवान, टिहरी

आसमान का एक तारा मेरे हिस्से भी आयेगा,
राह मुकम्मल मंजिल मेरी आसां वो कर जाएगा।
सूरज की लाली धूप संग मुझको, मिलने आयेगी।
धूप छांव के किस्सों को आकर वो दोहरायेगी,
रंगों से सतरंगी हिस्सा भी मांग मैं लाऊंगी।
फिर फूलों में तितली बन इधर–उधर इठलांऊगी,
आवारा बादल बन फिर मैं झूम के बरस जाऊंगी,
सर्द हवा और धूप छांव के कुछ किस्से ले आऊंगी,
आसमां का एक तारा, जब–जब हिस्से में मेरे आयेगा।

रास्ते सारे खो जाते हैं

कविता

श्रीमती सीमा बिज्लवान
पत्नी श्री जे.पी.बिज्लवान,टिहरी

कुछ छूट गये कुछ टूट गये,
रिश्ते थे कुछ धागे थे,
रेशम के कुछ सूत कपास के,
मिले हुए थे आपस में,
वक्त–वक्त को ले भागा।
अनजानी सी राहों में आते–जाते से मौसम सा,
टूटे से जो ख्वाब थे धागों में वो उलझ गये,
भूल गये उन रिश्तों को जो वक्त के साथ,
रूठ गये अनदेखी सी राहों में।

मेरे हर ख्याल का तू एक ख्याल है.....

कविता

यशवंत सिंह नेगी
कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी), खुर्जा

इबादत में तेरी ऐ मेरे रहबर इस कदर खो जाऊँ मैं,
कि तेरी जन्नत की ख्वाइश को भी भुलाता जाऊँ मैं।
कयामत के उन मुश्किल लम्हों में,
तेरे हर इम्तिहान से मुस्कुरा कर गुजर जाऊँ मैं।
तेरी बेशुमार रहमतों का, पल पल शुक्रगुजार हो गया हूँ मैं,
काबिले मुर्शद की आँखों में, जीने का सलीखा जान गया हूँ मैं।
वक्त की करवट से बेखबर, आज को जीना सीख गया हूँ मैं
महफूज हूँ अब तेरी रजा में, जीने का सलीखा जान गया हूँ मैं।
मेरे काबिल–ए–मुरशद के इल्म से, अब रोशन हो गया हूँ मैं।
खुदा की इबादत के जुनून में, खुद को ही भूलने लगा हूँ मैं।
शुक्र है मेरे रहबर, तेरी बेशुमार इनायतों का,
कि हर तरफ एक तेरा ही, दीदार किये जाता हूँ मैं।
अमानत–ए–जिन्दगी, जो तूने मुझे बख्शी है,
कि तेरी हुकूमत की शह में, जिन्दगी जिए जाता हूँ मैं।
तेरी इनायत ऐसी है, मेरे काबिल–ए–मुरशद,
कि अपनी हस्ती को, तेरी पनाह में मिटाए जाता हूँ मैं।
मुझे अब खबर ही कहाँ है ऐ खुदा, तेरे इस जहाँ की,
कि तेरे अहसास में, जिन्दगी का किरदार निभाये जाता हूँ मैं।
खुदी को मिटाकर, इस खुदा की आरजू में,
तेरी मुक्कमल इबादत को, जिंदगी का मकसद समझता हूँ मैं।
इबादत में तेरी ऐ मेरे रहबर इस कदर खो जाऊँ मैं,
कि तेरी जन्नत की ख्वाइश को भी भुलाता जाऊँ मैं।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

प्रथम कार्यशाला

श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) की अध्यक्षता में कार्यशाला का शुभारंभ

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 13 मार्च, 2023 को कार्यपालकों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे अपर महाप्रबंधक (मा.सं एवं प्रशा.), श्री ईश्वरदत्त तिग्गा ने अपने संबोधन में कहा कि हममें से अधिकांश ''क'' क्षेत्र के रहने वाले हैं साथ ही हिंदी का कार्यसाधक या प्रवीण ज्ञान अवश्य ही रखते हैं, इस कारण से मुझे नहीं लगता कि हिंदी में कार्य करने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई आनी चाहिए। हमें राजभाषा विभाग के द्वारा निर्धारित लक्ष्य को 100 प्रतिशत तक प्राप्त करने का अवश्य ही प्रयास करना चाहिए। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कार्यशाला आप सभी के राजभाषा से संबधित ज्ञान में वृद्धि करने में अवश्य ही सहायक होगी। उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने विभिन्न विभागों में नियुक्त कार्यपालक प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए बताया कि राजभाषा विभाग के द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अनुपालन के क्रम में प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन करना अनिवार्य है तथा दो वर्ष की अवधि के दौरान प्रत्येक कर्मचारी को हिंदी कार्यशाला में प्रतिभाग करने का अवसर अवश्य मिलना चाहिए। इसी क्रम में सभी कर्मचारियों को राजभाषा के नियमों एवं दिशा निर्देशों की जानकारी दी जाती है और उन्हें राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाता है। कार्यशाला के प्रथम सत्र में कनि. अधिकारी (हिंदी), श्री नरेश सिंह ने राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा के बारे में बताते हुए राजभाषा हेतु संवैधानिक प्रावधान, राजभाषा अधिनियम–1963, राष्ट्रपति जी के आदेश–1960, राजभाषा संकल्प–1968 एवं राजभाषा नियम–1976 के बारे में प्रतिभागियों को विस्तार से बताया। कार्यशाला के दूसरे सत्र में उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने राजभाषा की उपयोगिता एवं महत्ता, सरल हिंदी का प्रयोग, कंप्यूटर में यूनिकोड को इनेबल करना, गूगल इनपुट टूल, हिंदी इंडिक व वाइस टाइपिंग के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यशाला में 28 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की। सभी प्रतिभागियों को राजभाषा में कार्य करने में सहायता के उद्देश्य से राजभाषा विभाग की प्रशासनिक शब्दावली (हिंदी–अंग्रेजी एवं अंग्रेजी–हिंदी) की प्रतियां वितरित की गई ।

द्वितीय कार्यशाला

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 21 जून, 2023 को हिंदी नोडल अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अपर महाप्रबंधक (परिकल्प–सिविल), श्री नटराजन कृष्णा ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना अब मुश्किल नहीं रहा है। कम्प्यूटरों में हिंदी में कार्य करने के लिए विभिन्न टूल्स मौजूद हैं। यहां तक कि इंटरनेट पर अनेक फोंट कनवर्टर भी मौजूद है जो कृति देव या अन्य गैर यूनिकोड फोंट को यूनिकोड के मंगल फोंट में कनवर्ट कर सकते हैं। हम अपने सामूहिक प्रयासों से हिंदी की विकास यात्रा में भागीदार बनें, मेरा यही सभी से अनुरोध है।

कार्यक्रम में श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने अवगत कराया कि माननीय संसदीय राजभाषा समिति के द्वारा 25 मई 2023 को कारपोरेट कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया है। जिसमें माननीय समिति के द्वारा कारपोरेट कार्यालय में हो रहे हिंदी कामकाज की प्रशंसा की गई है और साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन को और बेहतर करने के लिए कुछ निर्देश दिए गए हैं। जिनमें ''क'' और ''ख'' क्षेत्र को भेजे जाने वाले पत्रों को शत–प्रतिशत

हिंदी में भेजा जाना, अंग्रेजी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिंदी में दिया जाना, हिंदी में प्रवीणता प्राप्त सभी कर्मचारियों को अपना समस्त सरकारी कामकाज हिंदी में करने संबंधी निर्देश शामिल हैं। श्री शर्मा ने कहा कि इन निर्देशों के अनुपालन में सभी संबंधित अधिकारियों को परिचालित किए गए कार्यालय आदेश के माध्यम से जांच बिंदु पुनः स्थापित किए गए हैं, जिनका पालन किया जाना अनिवार्य है। इसके साथ ही कार्यक्रम में राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम की प्रमुख मदों पर भी चर्चा की गई।

कार्यशाला का दृश्य

टिहरी यूनिट

प्रथम कार्यशाला

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते अधिकारीगण

टिहरी यूनिट में 16 मार्च, 2023 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ आंतरिक संकाय श्री इन्द्र राम नेगी एवं बाह्य संकाय सदस्य श्री डी. एस. रावत, पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड कोटेश्वर एवं अन्य अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर दिनांक 16.02.2023 को आयोजित हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। श्री नेगी ने उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि समय–समय पर हिंदी अनुभाग द्वारा नियमित रूप से हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। हिंदी कार्यशालाओं एवं इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागियों की संख्या में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। कार्यशाला का उद्देश्य यही है कि हम सुनिश्चित करें कि अपने सभी कार्यालयीन कार्यों को शत–प्रतिशत हिंदी में सम्पन्न कर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें। कार्यशाला में आमंत्रित बाह्य संकाय सदस्य श्री डी. एस.रावत ने हिंदी भाषा के स्वरुप एवं भविष्य तथा पत्राचार के विविध रूपों पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया। प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्र राम नेगी ने कम्प्यूटर एवं मोबाइल में हिंदी वाईस टाइपिंग के बारे में जानकारी दी तथा राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गये लक्ष्यों पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण दिया। श्री नेगी ने कार्यालय में तकनीकी शब्दावली का प्रयोग करने एवं दिन प्रतिदिन के कार्यों में हिंदी के प्रयोग में आने वाली रुकावटों के समाधान के बारे में भी बताया। कार्यशाला में टीएचडीसीआईएल के 31 अधिकारियों ने भाग लिया।

द्वितीय कार्यशाला

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी में 22 जून, 2023 को टिहरी एवं कोटेश्वर के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए संयुक्त रूप से एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे उप महाप्रबंधक (विद्युत) श्री डी.सी. भट्ट एवं मुख्य संकाय सदस्य, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (सेवानिवृत्त), केएचईपी, कोटेश्वर, श्री डी.एस. रावत का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ श्री डी.सी. भट्ट, श्री डी.एस. रावत एवं श्री इन्द्र राम नेगी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

इस अवसर पर उप महाप्रबंधक (विद्युत) श्री डी.सी. भट्ट ने राजभाषा के स्वरुप एवं महत्व पर बल देते हुए कहा कि हम सभी 'क' क्षेत्र में आते हैं इसलिए हम सुनिश्चित करें कि हम अपने समस्त कार्य हिंदी में ही करें। हमें अपने सभी कार्यालयीन कार्यों को शत–प्रतिशत हिंदी में संपन्न कर राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य, श्री रावत ने उपस्थित प्रतिभागियों को राजभाषा नियम एवं अधिनियम एवं कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप एवं पत्राचार के विविध रूप पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया एवं अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी द्वारा कम्प्यूटर एवं मोबाइल में हिंदी वाइस टाइपिंग एवं कार्यालय में मानक शब्दावली के प्रयोग पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण दिया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती नीरज सिंह, कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के 46 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

कोटेश्वर यूनिट

प्रथम कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला में पूर्व वरि.हिंदी अधिकारी, श्री डी.एस.रावत का पुस्तक भेंट कर स्वागत करते अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री अमर नाथ त्रिपाठी

कोटेश्वर यूनिट में दिनांक 17.03.2023 को अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ डॉ. ए.एन.त्रिपाठी, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), आंतरिक संकाय श्री इन्द्र राम नेगी एवं बाह्य संकाय सदस्य श्री डी. एस. रावत, पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, कोटेश्वर एवं अन्य अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर कोटेश्वर यूनिट में दिनांक 24.02.2023 को आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को डॉ.ए.एन.त्रिपाठी द्वारा पुरस्कृत किया गया। श्री त्रिपाठी ने उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें अपने कार्यालयीन कार्यों को शत–प्रतिशत हिंदी में करना चाहिए ताकि राजभाषा विभाग द्वारा दिए गए लक्ष्यों को पूरा किया जा सके। कार्यशाला में आमंत्रित बाह्य संकाय सदस्य श्री डी.एस.रावत ने प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियमों एवं नियमों की जानकारी दी। प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्र राम नेगी ने प्रतिभागियों को राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गये लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी गई। कार्यशाला का संचालन श्री आर.डी. ममगाई द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में कोटेश्वर यूनिट के 25 अधिकारियों ने भाग लिया।

अन्य यूनिट एवं कार्यालय

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी एवं खुर्जाएसटीपीपी, खुर्जा में क्रमशः 23 मार्च, 2023 एवं 24 मार्च, 2023 को हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें इन कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा नीति, अधिनियम एवं नियमों की जानकारी दी गई तथा टिप्पणी लेखन का अभ्यास कराया गया।

नराकास, हरिद्वार की 35वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, नराकास राजभाषा वैजयंती पुरस्कार योजना के अंतर्गत पुरस्कृत

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश को वर्ष 2021–22 के लिए सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों की श्रेणी में नराकास राजभाषा वैजयंती के तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 23 जनवरी, 2023 को आयोजित हुई 35 वीं अर्धवार्षिक बैठक में प्रदान किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार देश की बड़ी नराकासों में से एक है जिसके सदस्य संस्थानों की संख्या 62 है। इस नराकास में रुड़की, हरिद्वार, ऋषिकेश एवं पौड़ी में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालय/विभाग/पीएसयू/संस्थान/बैंक आदि शामिल हैं ।

समिति की 35 वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन 23 जनवरी, 2023 को सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की में किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय एवं सभी विशिष्ट अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ भेंट कर किया गया। सभी प्रमुख अतिथिगणों ने दीप प्रज्ज्वलित किया और वंदेमातरम राष्ट्रगीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के शुभारंभ के अवसर पर रिपोर्टों की समीक्षा से पूर्व छमाही के दौरान आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। समिति के सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से नराकास, हरिद्वार द्वारा संचालित की गई विभिन्न पहलों के बारे में जानकारी देते हुए पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों एवं कार्यलक्ष्यों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई के बारे में अवगत कराया तथा सदस्य संस्थानों की हिंदी प्रगति की अर्धवार्षिक रिपोर्ट के आंकड़ों की समीक्षा की। साथ ही उन्होंने सदस्य संस्थानों से अपेक्षाएं, सदस्य कार्यालयों के द्वारा सक्रियता से नराकास के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों/कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं/बैठकों में भाग लेने, नराकास की भावी कार्य योजनाओं, राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए आदेशों एवं दिशा–निर्देशों के बारे में जानकारी दी ।

समिति के अध्यक्ष, श्री जे. बेहेरा ने अपने संबोधन में सभी सदस्य संस्थानों के प्रमुखों एवं अधिकारियों को नववर्ष एवं भावी गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दी। उन्होंने नराकास वैजयंती के विजेता संस्थानों एवं प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि आगे भी इसी मनोयोग से प्रतिभागिता करने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रतियोगिताओं एवं कार्यशाला में प्रतिभागियों की संख्या में वृद्धि पर हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सरल एवं प्रचलित शब्दों के प्रयोग से हम सब मिलकर हिंदी के विकास में योगदान कर सकते हैं। उन्होंने अनुवाद के क्षेत्र में गूगल की सराहना करते हुए कहा कि इस ओर बेहतर प्रयास करने के उद्देश्य से राजभाषा विभाग ने मैमोरी आधारित टूल ''कंठस्थ–2'' विकसित किया है जिसका प्रयोग सभी संस्थानों के अधिकारियों को करना चाहिए। उन्होंने सभी संस्थान प्रमुखों से अनुरोध किया कि नराकास की बैठकों में अवश्य ही प्रतिभागिता करें।

नराकास राजभाषा वैजयंती पुरस्कार प्राप्त करते टीएचडीसी के अधिकारी/कर्मचारी

बैठक में मंचासीन नराकास के अध्यक्ष, श्री जे.बेहेरा, सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार, आई.आई.टी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत एवं प्रशासनिक अधिकारी, श्री परवेश चन्द, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री आई.तिग्गा, उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा

नराकास, टिहरी की 24वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टिहरी की 24वीं अर्धवार्षिक बैठक 16 दिसंबर, 2022 को श्री यू.के. सक्सेना, कार्यपालक निदेशक (टीसी), टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में सभागार, अतिथिगृह, भागीरथीपुरम, टिहरी में आयोजित की गई। इस अवसर पर श्री ए.के घिल्डियाल, महाप्रबंधक, परियोजना (कोटेश्वर), श्री सी.पी. सिंह, महाप्रबंधक, नई परियोजना, नई टिहरी, डॉ. ए.एन.त्रिपाठी, अपर महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं प्रशासन (प्रभारी सचिवालय, नराकास) भी उपस्थित थे। बैठक का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। बैठक में नराकास के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों, बैंको एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/स्वायत्त निकायों के 20 प्रमुख/प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

बैठक की कार्यवाही आगे बढ़ाते हुए सचिव, नराकास श्री इन्द्र राम नेगी ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से समीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने समीक्षा के दौरान राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3), राजभाषा नियम–5, हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी, हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण एवं कम्प्यूटर में यूनिकोड प्रणाली आदि पर विस्तार से चर्चा की तथा रिपोर्ट में पाई गई खामियों से अवगत कराते हुए उन्हें भविष्य में दूर करने हेतु सलाह दी। बैठक की अध्यक्षता कर रहे श्री यू.के. सक्सेना ने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों/सदस्यों के सहयोग एवं समन्वय से नराकास की गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित किया जा सकता है। हम राजभाषा विभाग, भारत सरकार के द्वारा सौंपे गए दायित्व को सभी सदस्य संस्थानों के सहयोग से पूरा कर रहे हैं। उन्होंने बैठक में अनेक सदस्य संस्थानों की अनुपस्थिति को लेकर चिंता व्यक्त की। श्री आर.डी.ममगाई, उप प्रबंधक, जनसंपर्क/हिंदी ने सभी उपस्थित सदस्यों/प्रतिनिधि सदस्यों को अपना अमूल्य समय देने एवं उपस्थिति हेतु आभार व्यक्त किया।

बैठक में उपस्थित अधिकारियों का ग्रुप फोटोग्राफ

हास-परिहास

- **पत्नी (पति से):** पूरा दिन क्रिकेट, क्रिकेट, मैं घर छोड़कर जा रही हूं.....

  पतिः (कामेन्टरी के अंदाज में) पहली बार कदमों का बेहतरीन इस्तेमाल !!

- पति अपनी नाराज पत्नी को रोज फोन करता है..... ..... **सासूजी** : कितनी बार कहा कि वो अब तुम्हारे घर नहीं आयेगी, फिर क्यों रोज–रोज फोन करते हो? **जमाईः** सुनकर अच्छा लगता है, इसलिए!

- लड़की अपने बॉयफ्रेंड के साथ बैठी थी..... **लड़काः** कल तो तेरे पापा ने मुझे खाने पे बुलाया है! **लड़कीः** सच्ची ? **लड़काः** हाँ, सुबह ही मिले थे आज तब बोले! **लड़कीः** ओ हाँ, वो.....श्राद्व खिलाने के लिए कौए नहीं मिल रहे थे न इसलिए.....!!

- **पिता जीः** रिजल्ट कैसा रहा तुम्हारा? **बेटाः** मास्टर साहब कह रहे थे एक साल और लग जायेगा तुम्हें इस क्लास में! **पिता जीः** बेटा चाहे दो–तीन साल लग जायें लेकिन फेल ना होना !

- गाँव से एक लड़का शहर पढ़ने आया, **एक लड़की ने पूछाः** तुम्हारा निक नेम क्या है? **लड़काः** वो क्या होता है? **लड़कीः** मतलब तुम्हें घर पर सब किस नाम से बुलाते है? **लड़काः** कामचोर!

- तूफानी बारिश में आधी रात को एक आदमी पिज्जा लेने गया! **पिज्जा वालाः** आप शादी शुदा हो ? **आदमीः** ऐसे तूफान में कौन सी माँ अपने बेटे को पिज्जा लेने भेजेगी!

- टीचर छात्र से गुस्से में कहता है– नालायक! क्लास में दिन भर लड़कियों के साथ इतनी बातें क्यों करता है? **छात्रः** सर मैं गरीब हूँ इसलिए! **टीचरः** इससे गरीबी का क्या लेना देना? **छात्रः** सर मेरे मोबाइल में व्हाटसऐप नहीं है.....।

- शास्त्रों के अनुसार हर लड़की में 9 देवियों का वास होता है, लेकिन शादी के बाद कौन सी देवी एक्टिव हो जाए ये लड़के के कर्मों पर निर्भर करता है।

- जिस दिन पेट्रोल–डीजल के भाव नहीं बढ़ते, घबराहट सी होती है, कहीं विकास रूक तो नहीं गया!

- मुसीबत में भी पत्नी से उधार न लें – मैंने 2 साल पहले 5 हजार उधार लिए थे, 02 बार दे चुका हूँ, 15 हजार अभी भी बाकी हैं, पता नहीं कौन सा गणित का हिसाब लगाती हैं!

- **टिल्लू**– मेरे दांत में कीड़ा लगा है इसे निकाल दीजिए, **डाक्टर**– ठीक है, मैं दवाई देता हूँ, **टिल्लू**– दाँत दर्द से तो मर जाना ही बेहतर है, **डाक्टर**– पक्का बताओ, फिर मैं उसी हिसाब से दवाई लिखूं!

- **भाई**– क्यों रो रही हो? **बहन**– मेरे नंबर बहुत कम हैं। **भाई**– कितने नंबर आए हैं? **बहन**– केवल 90 प्रतिशत। **भाई**– बहन रहम कर, इतने में तो हम जैसे तीन लड़के पास हो जाते!

- एक आदमी साधू से बोला, बाबा, मेरी बीवी बहुत परेशान करती है, कोई उपाय बताओ ? **साधू**– बेटा, उपाय होता तो मैं साधू क्यों बनता!

रामधारी सिंह दिनकर
(23 सितंबर,1908–24 अप्रैल, 1974)

“वसुधा का नेता कौन हुआ?
भूखण्ड–विजेता कौन हुआ?
अतुलित यश क्रेता कौन हुआ?
नव–धर्म प्रणेता कौन हुआ?
जिसने न कभी आराम किया,
विघ्नों में रहकर नाम किया।

जब विघ्न सामने आते हैं,
सोते से हमें जगाते हैं,
मन को मरोड़ते हैं पल–पल,
तन को झंझोरते हैं पल–पल।
सत्पथ की ओर लगाकर ही,
जाते हैं हमें जगाकर ही।”

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)
गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाष: 0135–2473614, वेबसाइट: http://www.thdc.co.in
श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (हिंदी) द्वारा टीएचडीसी इंडिया लि. के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

www.paromita.org